

॥ श्रीः ॥

गणेशकविरचित.



जातकालंकार।

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास.

मालिक-लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,



कल्याण-मुंबई



श्रीः ॥


S. N.
LIBRARY

जातकालंकार ।

भाषाटीकासहित ।



इसको

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदासने

अपने " लक्ष्मीवेंकटेश्वर " छापेखानेमें

छापकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९८१, शके १८४६.

कल्याण-मुंबई.

सब हक्क यन्त्राधिकारीने अपने अधीन रक्खा है.

श्रीः ।

अथ जातकालंकारविषयानुक्रमणिका ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ जातकालंकारः

भाषाटीकासहितः ।

अथ संज्ञाध्यायः १ ।

मंगलाचरणम् ।

सानन्दं प्रणिपत्य सिद्धिसदनं लम्बोदरं भारतीं सूर्यादिग्रहमण्डलं निजगुरुं भक्त्याहृदब्जे स्थितम् ॥ येषामंघ्रिसरोरुहस्मरणतो नानाविधाः सिद्धयः सिद्धिं यान्ति लघु प्रयान्ति विलयं प्रत्यूहशैलव्रजाः ॥ १ ॥

अर्थ--श्रीगणेशं गुरूंश्चैव स्वेष्टदेवं सरस्वतीम् । प्रणम्य क्रियते ह्येषा भाषाटीका सुशोभना ॥ १ ॥ जिनके चरणकमलके स्मरण करनेसे अनेक प्रकारकी सिद्धियां शीघ्रही परिपूर्ण होती हैं और विघ्नरूप पर्वतोंके समूह शीघ्रही नष्ट होते हैं ऐसे गणेशजीको सरस्वतीको सूर्यादि ग्रहोंके मंडलको अपने गुरुओंको हृदयकमलमें स्थित हुए आनंदसहित रहनेवाले और सिद्धिके निलय विष्णुभगवान्‌को प्रणाम करके फिर ॥ १ ॥

सद्भावाकलितं पदार्थललितं योगाङ्गलीलाचितं श्रीमद्भागवतं शुकास्यगलितं यच्छ्रीधरस्वामिना ॥

सुव्यक्तं क्रियते गणेशकविना गाथोक्तितज्जातकं
वृत्तस्रग्धरया जनादिसुफलं ज्योतिर्विदां जीवनम् २॥

अर्थ—श्रीशुकदेवजीके मुखसे प्रगट हुआ (६७ कासंस्कृतवद्धजात जैसे श्रीशुकदेवजीके मुखसे प्रगट हुआ श्रेष्ठ भक्तिभावोंकरके विशिष्ट, श्रवण कीर्तन आदि „ करके मनोहर, भक्तियोगके यम नियम आदि अंगोंकी लीला कहिये उपदेशविशेषोंकरके पूजित, ज्योतिःस्वरूप परमात्माके जाननेवालोंका तथा ब्रह्मवेत्ताओंका जीवनके कालक्षेप योग्य ऐसा श्रीमद्भागवत पुराण, श्रीधर स्वामीजीने (टीका रचके प्रगट कियाहै तैसेही सम्भाव (द्वादशभावों करके) विशिष्ट पदार्थललित (आनंदस्थानोंकरके मनोहर), योगांग कहिये ग्रहभावादिकोंकी लीलाकरके सुन्दर, ज्योतिर्विद् (ज्योतिषियों) का जीवनरूप ऐसा यह गाथा, दंडकउक्तिसे कहा हुआ, जन आदिकोंको सुन्दर फल कहनेवाला जातक स्रग्धरा छंदसे गणेशनामक (मुझ) कविकरके सुन्दर प्रगट किया जाता है अर्थात् मैं गणेशकरि इस जातकको स्रग्धरा छंदकरके रचता हूं ॥ २ ॥

यत्पूर्वं परमं शुकास्यगलितं सज्जातकं फक्किका-
रूपं गूढतमं तदेव विशदं कुर्वे गणेशोऽस्म्य-
हम् ॥ दैवज्ञः सुतरां यशःसुखमतिः श्रीहर्षदं
स्रग्धरावृत्तैश्चारु नृणां शुभायनपदं श्रीमच्छिवा-
नुज्ञया ॥ ३ ॥

अर्थ–जो पहले श्रीशुकदेवजीके मुखसे प्रगट हुआ (छंदरहित होनेसे) फक्किकारूप अत्यन्त गूढ उत्तम जातक है उसीको दैवज्ञ निरंतर यशसे उत्पन्न हुए सुखमें बुद्धि रखनेवाला मैं गणेशनामक कवि श्रीमान् शिवनामक गुरुकी आज्ञासे विशद (तोफा, सुंदर) लक्ष्मी और कीर्ति देनेवाले आनंदसिद्धिदायक भावोंका स्थानरूप जातकको करता हूं ॥ ३ ॥

भूयांसः सन्ति भूमौ निजमतिरचनाशालिनःकाव्यगुम्फे संख्यावन्तस्तथापि प्रचुरपरगुणानन्दलीलां भजन्ते ॥ चञ्चद्गाम्भीर्यपद्माविबुधविटपिनां जन्मसंप्राप्तिभूतोमर्यादां न स्वकीयां त्यजति किल महान् रत्नधामा सरस्वान् ॥ ४ ॥

अर्थ–यद्यपि काव्य रचनेमें पृथ्वीतलमें अपनी बुद्धिकी रचना करनेवाले बहुतसे कविजन हैं तथापि वे कविजन विशेषकरके पराये गुणोंसे उत्पन्न हुई आनंदलीलाको भजते हैं क्योंकि प्रकाशमान, गांभीर्य, लक्ष्मी कल्पतरु इन्होंको उत्पन्न करनेवालाभी महान् रत्नोंका स्थान समुद्र अपनी मर्यादाको नहीं त्यागता है तैसेही महंत उत्तमजन अपनी मर्यादामें रहते हैं ॥ ४ ॥

तन्वादिभावाः ।

देहं द्रव्यपराक्रमौ सुखसुतौ शत्रुः कलत्रं मृतिर्भाग्यं राजपदं क्रमेण गदिता लाभव्ययौ लग्नतः ॥

भावा द्वादश तत्र सौख्यशरणं देहं मतं देहिनां तस्मादेव शुभाशुभाख्यफलजः कार्यो बुधैर्निर्णयः ॥ ५ ॥

अर्थ—देह १ द्रव्य २ पराक्रम ३ सुख ४ सुत ५ शत्रु ६ कलत्र ७ मृति ८ भाग्य ९ राज्यपद १० लाभ ११ व्यय १२ ये बारहों भाव क्रमकरके लग्नसे कहे हैं तहां देहधारी जीवोंके देह (शरीरही) सुखका आश्रय कहा है इसलिये पण्डितजनोंको तिस देहभावसेही अर्थात् लग्नसेही शुभ अशुभ फलका निर्णय करना चाहिये ॥ ५ ॥

तन्वादिसंज्ञाः ।

लग्नं मूर्तिस्तथाङ्गं तनुरुदयवपुः कल्पमाद्यं ततः स्वं कोशार्थाख्यं कुटुम्बं धनमथ सहजं भ्रातृदुश्चिक्यसंज्ञम् ॥ अम्बा पातालतुर्यं हिबुकगृहसुहृद्वाहनं यानसंज्ञं वन्ध्वाख्यं चाम्बु नीरं जलमथ तनयं बुद्धिविद्यात्मजाख्यम् ॥ ६ ॥

अर्थ—लग्न, मूर्ति, अंग, तनु, उदय, वपु, कल्प, आद्य ये लग्न (तनुभाव) के नाम हैं और स्व, कोश, अर्थ, कुटुंब, धन इन नामोंवाला दूसरा भवन है और सहज, भ्रातृ, दुश्चिक्य ये तीसरे भवनकी संज्ञा हैं. अंबा, पाताल, तुर्य, हिबुक, गृह, सुहृद, यान, बंधु, अंबु, नीर, जल ये चौथे भवनके नाम हैं और तनय, बुद्धि, विद्या, आत्मज नामक ॥ ६ ॥

वाक्स्थानं पञ्चमं स्यात्तनुजमथ रिपुद्वेषवैरिक्षताख्यं षष्ठं जामित्रमस्तं स्मरमदनमदद्यूनकामाभिधामम् ॥ रन्ध्रायुश्छिद्रयाम्यं निधनलयपदं चाष्टमं मृत्युरन्यद्गुर्वाख्यं धर्मसंज्ञं नवममिह शुभं स्यात्तपो मार्गसंज्ञम् ॥ ७ ॥

अर्थ–वाक्स्थान ये पांचवें घरके नाम हैं और द्वेष, वैरी, क्षत ये छठे घरके नाम हैं. जामित्र, अस्त, स्मर, मदन, मद, द्यूत, काम ये सातवें घरके नाम हैं. रंध्र, आयु, छिद्र, याम्य, निधन, लय, मृत्यु ये आठवें घरके नाम हैं और गुरुनामक, धर्मनामसे प्रसिद्ध और शुभ तपोमार्ग ये नवम घरके नामहैं॥ ७॥

ताताज्ञामानकर्मास्पदगगननभोव्योममेपूरणाख्यं मध्यं व्यापारमूचुर्दशममथ भवं चागमं प्राप्तिमायम् ॥ इत्थं प्रान्त्यान्तिमाख्यं मुनय इह ततो द्वादशं रिःफमाहुर्ग्राह्यं बुद्धा प्रवीणैर्यदधिकमयुतः संज्ञया तस्य तच्च ॥ ८ ॥.

अर्थ–तात, आज्ञा, मान, कर्म, आस्पद, गगन, नभ, व्योम, मेपूरण, मध्यम, व्यापार ये दशवें घरके नाम कहे हैं और ग्यारहवें घरको आगम, प्राप्ति, आय इन नामोंसे कहते हैं और प्रान्त्यांतिम नामक अर्थात् प्रांत्य, अंतिम, रिःफ ये बारहवें घरके नाम हैं और इस कहे हुए नामसमुदायसे जो अधिक नाम होवें वह पण्डितजनोंने निमी २ नामक पर्यायसे

जानके ग्रहण कर लेना जैसे वित्त ऐसा नाम हो तो धनका पर्याय होनेसे दूसरा प्रबल जान लेना ॥ ८ ॥

आद्यं तुर्यं कलत्रं दशममिह बुधैः केन्द्रमुक्तं त्रिकोणं पुत्रं धर्माख्यमुक्तं पणफरमुदितं मृत्युलाभात्मजार्थम् ॥ धर्मं चापोक्लिमाख्यं व्ययरिपुसहजं कण्टकाख्यं हि केन्द्रं चैतच्चातुरस्यं स्यात्त्रिकमिह गदितं वैरिरिःफान्तकाख्यम् ॥ ९ ॥

अर्थ—इस शास्त्रसे पण्डितजनोंने आद्य १ चतुर्थ ४ सप्तम ७ दशम १० इन चार घरोंकी केंद्र संज्ञा कही है. और कोई केंद्र (१ । ४ । ७ । १० । इन चार घरों) कोही कंटक नामकभी कहते हैं. पांचवां ५ नवम ९ घरको त्रिकोण कहते हैं. आठवां ८ ग्यारहवां ११ पांचवां ५ दूसरा २ इन घरोंको पणफर कहते हैं. नवम ९ बारहवां १२ छठा ६ तीसरा ३ इन घरोंको आपोक्लिम कहते हैं और छठा ६ बारहवां १२ आठवां ८ इन घरोंकी त्रिकसंज्ञा कही है ॥ ९ ॥

ग्रहाणां शत्रुमित्रसमसंज्ञाः ।

चन्द्रेज्यक्षितिजा रवीन्दुतनयो गुर्विन्दुसूर्याः क्रमाच्छुक्रार्कौ रविचन्द्रभूमितनया ज्ञार्कौ सितज्ञौ मताः ॥ अर्कादेः सुहृदः समा अथ बुधः सर्वे हि शुक्रार्कजौ भौमाचार्ययमा यमः कुजगुरू पूज्यः परे वैरिणः ॥ १० ॥

अर्थ—चंद्रमा, बृहस्पति, मंगल ये सूर्यके मित्र हैं, बुध समान है, अन्य (शुक्र, शनि, राहु) ये शत्रु हैं और सूर्य, बुध चंद्रमाके मित्र हैं, अन्य सब ग्रह सम हैं (परन्तु राहु तो शत्रुही जानना) और बृहस्पति, चंद्रमा, सूर्य मंगलके मित्र, शुक्र, शनि सम हैं, अन्य (बुध) शत्रु है और शुक्र, सूर्य बुधके मित्र हैं, मंगल, बृहस्पति, शनि ये समान हैं, चंद्रमा शत्रु है और सूर्य, चंद्रमा, मंगल ये बृहस्पतिके मित्र हैं, शनि सम है, अन्य शत्रु हैं और बुध, शनिके मित्र हैं, मंगल, बृहस्पति सम हैं, अन्य शत्रु हैं; शुक्र, बुध शनिके मित्र हैं, बृहस्पति सम है, अन्य कहिये बाकी रहे सूर्य, चंद्रमा, मंगल ये शत्रु हैं ॥ १० ॥

ग्रहदृष्टिः ।

तृतीयदशमे ग्रहो नवमपञ्चमेष्टांबुनी क्रमाच्चरणवृद्धितः स्मरगृहं ततः पश्यति ॥ कुजः सितबुधौ शशी रविबुधौ सितक्ष्मासुतौ गुरुर्यमशनी गुरुर्भवनपा इमे मेषतः ॥ ११ ॥

अर्थ—तीसरे दशवें घर सब ग्रह एक चरण दृष्टिसे देखते हैं, नवम पांचवें दो चरण दृष्टिसे देखते हैं. आठवें चौथे तीन चरण दृष्टिकरके देखते हैं और सातवें घरमें स्थित सब ग्रह चार पददृष्टिसे अर्थात् पूर्णदृष्टिसे देखते हैं (अन्य ग्रंथका यहभी मत है कि तीसरे दशवें शनि, नवम पांचवें बृहस्पति,

चौथे आठवें मंगल पूर्ण दृष्टिसेही देखते हैं) और मंगल १ शुक्र २ बुध ३ चंद्रमा ४ सूर्य ५ बुध ६ शुक्र ७ मंगल ८ बृहस्पति ९ शनि १० शनि ११ बृहस्पति १२ ऐसे क्रमसे मेष आदि राशियोंके ये स्वामी कहेहैं. तहां मंगल मेषका स्वामी शुक्र वृषका स्वामी इसी क्रमसे १ आदि अंक राशियोंके समझना ॥ ११ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोषेऽलंकाराख्ये जातके मंजुलेऽस्मिन्॥ संज्ञाध्यायः श्रीगणेशेन वर्यैर्वृत्तैर्दिग्भिः संयुतोऽयं प्रणीतः ॥ १२ ॥

इति जातकालंकारे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अर्थ—श्रीगणेशनामक कविने मनोहर छंदोंकरके रचे हुए जातकालंकार नामक इस ग्रंथमें श्रेष्ठ दश श्लोकोंकरके यह प्रथम अध्याय रचा है ॥ १२ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः॥ १ ॥

अथ भावाध्यायः २ ।

शुकाननसरोरुहाद्गलितमत्र भूमीतले फलं परमसुंदरं सकलमाकलय्याधुना ॥ ब्रवीमि तनुभावतः प्रवरदैववित्तोपदं यदत्र मम चापलं किमपि तत्क्षमध्वं बुधाः ॥ १ ॥

अर्थ-मैं गणेशकवि अब श्रीशुकदेवजीके मुखसे प्रचलित होके यहां पृथ्वीपर शिष्यप्रशिष्यद्वारा प्राप्त हुए परम सुन्दर संपूर्ण फलको विचारके उत्तम दैवज्ञोंकी प्रसन्नताके वास्ते तनुभावसे लेके सब भावोंको कहता हूं. हे पंडितजनो ! जो यहां कुछ चपलता, न्यूनता हो उसको क्षमा करो ॥ १ ॥

अथ तनुभावफलम् ।

देहाधीशः स पापो व्ययरिपुमृतिगश्चेत्तदादेहसौख्यं न स्याज्जन्तोर्निजर्क्षे व्ययरिपुमृतिपस्तत्फलस्यैव कर्ता ॥ मूर्तौ चेत्क्रूरखेटस्तदनुतनुपतिः स्वीयवीर्येण हीनो नानातंकाकुलःस्याद्व्रजति हि मनुजो व्याधिमाधिप्रकोपम् ॥ २ ॥

अर्थ-लग्नका स्वामी पापग्रहसे युक्त हो अथवा बारहवें १२ छठे ६ आठवें ८ घरमें पडा हो तो उसको देहका सुख नहीं होवे और द्वादशभावका पति बारहवें घर हो, छठे घरका पति छठे घर हो आठवें घरका पति आठवें घर हो तोभी यही फल करनेवाला है अर्थात् देहसुख नहीं हो. (परंतु बृहज्जातकमें यह शुभ योग कहा है इसलिये दूसरा अर्थ यह जानना कि लग्नपति पापग्रहसे युक्त हो अथवा १२, ६, ८ इन स्थानोंके स्वामियोंके संगमेंही पडा हो तो देहसुख नहीं जानना और लग्नमें क्रूर ग्रह हो, लग्नका पति अपने बलकरके हीन हो तो वह मनुष्य अनेक पीडा, रोग, चिंताओंको प्राप्त होवे) ॥ २ ॥

अथ शुभयोगाः ।

अङ्गाधीशः स्वगेहे बुधगुरुकविभिः संयुतः केन्द्रगो वा स्वीये तुङ्गे स्वमित्रे यदि शुभभवने वीक्षितः सत्त्वरूपः ॥ स्यान्नूनं पुण्यशीलः सकलजनमतः सर्वसम्पन्निधानं ज्ञानी मन्त्री च भूपः सुरुचिरनयनो मानवो मानवानाम् ॥ ३ ॥

अर्थ–लग्नका पति लग्नमें हो अथवा बुध, बृहस्पति, शुक्रसे युक्त होके केंद्रमें पडा हो अथवा उच्चका हो अथवा अपने मित्रके घरमें हो अथवा शुभग्रह अर्थात् नववें ९ घरमें हो वा शुभ ग्रहसे दृष्ट हो तो वह मनुष्य मनुष्योंके मध्यमें राजा हो अथवा मंत्री हो, सब संपत्तियोंका स्थान हो, ज्ञानी और सत्त्वगुणी रूपवाला सुंदर नेत्र आदि उत्तम शरीरवाला पुण्यवान् संपूर्ण जनोंकरके मान्य होवे ॥ ३ ॥

लग्ने क्रूरेऽथ याते खलखचरगृहं लग्ननाथे स्वान्दू क्रूरान्तस्थानसंस्थावथ दिनपनिशानाथयोर्द्यूनयायी ॥ भूमीपुत्रस्तु पृष्ठादुदयमधिगतश्चन्द्रजश्चे न्मनस्वी स्यादन्धो दुष्टकर्मा परभवनरतः पूरुपः क्षीणकायः ॥ ४ ॥

अर्थ–लग्नका पति क्रूर ग्रहकी राशिपर स्थित हो अथवा सूर्य चंद्रमा क्रूरग्रहोंके मध्य (बीच) में स्थित हो यह दूसरा योग हुआ और सूर्यसे वा चंद्रमासे सातवें स्थानमें मंगल हो

और बुध पिछली राशिपर स्थित होवे तो इन तीन योगोंमें एक योगकेभी होनेसे उदार मनवाला अंधा दुष्टकर्म करनेवाला पराई स्त्रीसे रमण करनेवाला क्षीण शरीरवाला मनुष्य होवे यहां उदार चित्तवाला चंद्रमाके बलकी अपेक्षासे जानना ॥ ४ ॥

अथ धनभावफलम् ।

कोशाधीशः स्वराशौ सुरगुरुसहितः सर्वसंपत्प्रदः स्यात् केन्द्रे वाथ त्रिके चेद्भवति हि मनुजः क्लेशभाग् द्रव्यहीनः ॥ स्वान्त्याधीशौ त्रिकस्थौ कवितनुपयुतौ स्यात्तदा नेत्रहीनश्चन्द्रः पापेन युक्तो धनभवनगतः शुक्रयुङ् नेत्रहीनः ॥ ५ ॥

अर्थ–धनस्थानका पति बृहस्पतिसे युक्त होके अपनी राशिका हो अथवा केंद्रस्थानमें स्थित हो तो संपूर्ण संपत्तियोंको देनेवाला होता है और बृहस्पतिसे युक्त होके छठे, आठवें, बारहवें घरमें हो तो द्रव्यसे हीन होवे और धनस्थानका तथा बारहवें घरका पति शुक्र और बृहस्पतिसे युक्त होके पडे हों तो जन्मनेवाला अंधा होवे और शुक्र तथा पापग्रहसे युक्त होके चंद्रमा धनभवनमें पडे तोभी वह मनुष्य अन्धा हो ॥ ५ ॥

शुक्रः सेन्दुस्त्रिकस्थो जनुषि निशिनरः प्राप्नुयादन्धकत्वं जन्मान्धः सार्कशुक्रस्तनुभवनपतिः स्यात्तदानीं मनुष्यः ॥ एवं तातानुजाम्बासुतनिजगृहिणीस्थाननाथाः स्थिताश्चेदादेश्यं तत्र तेषां प्रवरमतियुतैरन्धकत्वं तदानीम् ॥ ६ ॥

अर्थ–चंद्रमासहित हुआ शुक्र छठे आठवें बारहवें घरमें पडा हो तो रात्रिमें अंधा रहनेवाला (रतांधीवाला) जन हो. जो यदि सूर्य शुक्रसे युक्त हुआ लग्नेश ६ । ८ । १२ घरमें हो तो जन्मांध होवे. इसी प्रकारसे पिता, भ्राता, पुत्र, स्त्री, माता इन स्थानोंके स्वामीभी जो सूर्य, चंद्र, शुक्र इनसे युक्त हो ६ । ८ । १२ इन घरोंमें हों तो येभी अंधे बताने पण्डितजनोंने ऐसा विचार करना चाहिये ॥ ६ ॥

अथ तृतीयभावफलम् ।

भ्रातृस्थानेशभौमौ व्ययरिपुनिधनस्थानगौ बन्धुहीनः स्वक्षेत्रे सौम्यदृष्टे सहजभवनपे मानवःस्याच्च तद्वान् ॥ केन्द्रस्थे बन्धुसौख्यं शुभविहगयुते स्याददभ्रं नराणां पापैश्चेदन्यथैतत्तदनु निजधिया ज्ञेयमित्थं समस्तम् ॥ ७ ॥

अर्थ–भ्रातृस्थानका पति और मंगल बारहवें, छठे, आठवें घर पडे तो जन्मनेवाला जन बंधुसे हीन होवे और जो यदि वह तीसरे घरका पति अपने घरमें पडा हो अथवा शुभग्रहसे दृष्ट हो तो बंधुसे युक्त होवे. जो यदि तृतीय घरका पति केंद्रस्थानमें हो शुभग्रहोंसे युक्त होवे तो बंधु (भाई) का सुख बहुत होवे और पापग्रहोंसे युक्त होके केंद्रस्थान १ । ४ । ७ । १० में हो तो बंधुका सुख नहीं हो ऐसा पंडितजनोंने संपूर्ण हाल अपनी बुद्धिसे विचारके कहना ॥ ७ ॥

अथ चतुर्थभावफलम् ।

पातालेशः स्वराशौ शुभखचरयुतो भाग्यनाथेन युक्तः सामन्तः स्यात्ततश्चेत्सुरपतिगुरुणावाहने शस्तनुस्थः ॥ संदृष्टो राजपूज्यस्तदनु च हिबुकाधीश्वरो लाभसंस्थो यानं पश्यन्नराणां निवहमभिमतं वाहनानां प्रदत्ते ॥ ८ ॥

अर्थ–चौथे घरका पति अपनी राशिपर शुभग्रहसे और नवम घरके स्वामीसे युक्त होके पडे तो राजा हो. फिर जो यदि चौथे घरका पति लग्नमें स्थित हो और बृहस्पतिसे पूर्ण दृष्टि करके दृष्ट हो तो राजपूज्य होवे. जो यदि यही चौथे घरका पति बृहस्पतिसे दृष्ट हुआ ग्यारहवें घरमें स्थित हो और चौथे घरको देखता हो तो मनुष्योंके वास्ते हस्ती घोडा आदि वाहनोंका बहुत पूरा सुख देवे ॥ ८ ॥

स्वक्षेत्रे तुर्यनाथस्तनुपतिसहितः स्यादकस्माद्गृहाप्तिः सौहार्दं वा सुहृद्भिस्तदितरगृहगश्चेद्गृहालम्भयोगः॥ यावन्तः पापखेटा धनदशमगृहप्रान्त्यपैश्चेत्त्रिकस्था युक्तास्तावत्प्रमाणाज्ज्वलनवशगताः क्लेशदाः स्युर्गृहा नुः ॥ ९ ॥

अर्थ–अथ गृहप्राप्ति आदि योग. चौथे घरका पति जो अपने क्षेत्र (४ घर) में लग्नपतिसे युक्त होके बैठा हो तो विनाही यत्न घर (मकान) की प्राप्ति होवे और मित्र हित-

कारक जनोंके संग प्रीति बढे जो यदि चौथे घरके विना अन्यही घरमें हो तो गृहप्राप्तिका अभाव हो और जितने पाप ग्रह दूसरे, दशवें, बारहवें घरके स्वामीके साथ होके त्रिक ६। ८ । १२ घरोंमें हो उतनेही घर (मकान) मनुष्यके अग्निसे जल जाते हैं इसीवास्ते दुःखदायी होते हैं ॥ ९ ॥

यावन्तो वाहनस्थाः शुभविहगदृशां गोचरा नो भवेयुस्तावन्तो वा विरामाः परमगुणवतां वाहनानां नृणां स्युः ॥ क्रूराः पश्यन्ति यानं व्ययनिधनगताश्चेत्तदा तद्वदेव प्राज्ञैरादेश्यमेषां खलु शुभकरणं शान्तिकं वाहनानाम् ॥ १० ॥

अर्थ–जितने पापग्रह चौथे घरमें स्थित होवें और शुभग्रहोंकरके दृष्टी नहीं होवें तो उतनेही परम उत्तम गुणवाले वाहन (हस्ती घोडा आदि) नष्ट होवें और जो यदि किसीके १२ । ८ इन घरोंमें पापग्रह बैठके फिर वे पापग्रह चौथे घरको देखते होवें तो पूर्वोक्त फल अर्थात् वाहन नष्ट होवेंगे ऐसा बताना तहां पंडित जनोंने वाहनोंकी शुभकारक शांति करना चाहिये ॥ १० ॥

अथ पंचमभावफलम् ।

विद्यास्थानाधिपो वा बुधगुरुसहितश्चेत्त्रिके वर्तमानो विद्याहीनो नरः स्यादथ नवमनिजक्षेत्रकेन्द्रेषु तद्वान् ॥ बालत्वं वृद्धता वा यदि गगनसदां

जन्मकाले तदा स्यात्प्रज्ञामान्द्यं नराणामथ यदि विहगः स्वर्क्षगो दोषहृत्स्यात् ॥ ११ ॥

अर्थ-पांचवें घरका पति अकेला अथवा बुध बृहस्पतिसे युक्त होके त्रिक ६। ८। १२ इन घरोंमें पडा हो तो वह नर विद्याहीन होवे और जो वह पंचमेश ५।९ केंद्र १। ४। ७। १० इन घरोंमें हो तो विद्यावान् होवे और जन्मसमयमें बुद्धिकारक ग्रहोंकी बालसंज्ञा हो अथवा वृद्धसंज्ञा होवे तो मंदबुद्धि होवे. जो यदि वही बालवृद्धसं अपने क्षेत्रका होवे तो मंदबुद्धिका दोष दूर होता है ॥ ११ ॥

वाक्स्थानेशो गुरुर्वा व्ययरिपुविलयस्थानगोवा गिवहीनश्चैवं पित्रादिकानां पतय इह युता मूकता-स्याच्च ताभ्याम् ॥ वागीशात्पञ्चमेशस्त्रिकभवन-गतः पुत्रधर्माङ्गनाथा रन्ध्रे द्वेष्यान्तिमस्था यदि जनुपि नृणामात्मजानामभावः ॥ १२ ॥

अर्थ-जो यदि पांचवें घरका पति अथवा बृहस्पति बारहवें, छटे, आठवें स्थानमें पडा हो तो जन्मनेवाला जन गूंगा हो इसी प्रकार पिता आदिकों (दशम भाव आदिकों) के पति पंचमेश और बृहस्पतिसे युक्त होके ६। ८। १२ घरमें होवें तो पिता आदिकोंको गूंगा बताना. यहां आदिशब्दसे भाई पुत्र आदिका स्थान देखना. बृहस्पतिकी राशिसे ६। ८। १२ घरमें पंचमेश होवे और पांचवें नवम लग्नका पति

जन्मलग्नकी राशिसे ६। ८। १२ राशिपर होवे तो मनुष्योंके पुत्रका अभाव बताना ॥ १२ ॥

किंचित्कालं विलम्बः शुभखगसहितास्तेऽथकर्के सुतर्क्षे चन्द्रे कन्याप्रजावान् प्रमिततनयवांश्चाथ देवेन्द्रपूज्यात् ॥ क्रूरश्चेत्पञ्चमस्थः सुतभवनगतः स्यात्तदाऽपत्यहीनश्छायापुत्रस्वगेहाद्यदि भगवति सुते सूनुरेकस्तदानीम् ॥ १३ ॥

अर्थ–५। ९। १ घरके पति शुभग्रहोंसे युक्त होवें तो संतान उत्पन्न होनेमें कुछ कालकी देरी होवे, जो यदि कर्कराशिका चंद्रमा पांचवें घरमें हो तो कन्यासन्तान हो अथवा अल्प १ ही पुत्र होवे और बृहस्पतिसे पांचवें घरमें क्रूर ग्रह हो अथवा वह क्रूर ग्रह लग्नसे पांचवें घरमें होवे तो संतान नहीं हो जो यदि अपनी राशिसे पांचवें घर अर्थात् २। ३ का शनि होवे तो एकही पुत्र हो, पूर्वोक्त क्रूर योग होनेसे और क्रूर दृष्टि होनेसे यह फल होते हैं ॥ १३ ॥

कुम्भे चेत्पञ्च पुत्रास्तदनु च मकरे नन्दनेऽप्यात्मजाः स्युस्तिस्रो भौमःसुतानां त्रितयमथ सुतादायको रौहिणेयः ॥ इत्थं काव्यः शशांको जनुपि च गुरुणा केवलेनैव पुत्राः पञ्च स्युःक्षेतुराह्वोः क्रियवृषभवने कर्कटे नो विलम्बः ॥ १४ ॥

अर्थ–पांचवें घरमें कुंभका शनि पड़ा हो तो पांच पुत्र होवें और मकरका होके हो तो तीन पुत्र होवें. जो यदि

मकरका मंगल ५ वे घरमें हों तो तीन पुत्र हो. जो पांचवें घरमें बुध हो तो कन्या हो. ऐसे ५ वें घरमें शुक्र चंद्रमा हो तोभी पुत्री होवे. जन्मसमय ५वें घरमें अकेलाही बृहस्पति हो तो ५ पुत्र होते हैं जो यदि ५ वें घरमें मेष वृष कर्क इन राशियोंके राहु केतु पडे हों तो संतान होनेमें कुछ विलंब नहीं हो (इससे विपरीत सब बात हो तो विलंब जानना)॥ १४॥

पापो वा वासवेज्यः सुखभवनगतः पञ्चमे वाऽष्टमे वा शीतांशुः सन्ततेः स्यात्खगुणमितसमातुल्य एव प्रबन्धः ॥ यावन्तः पापखेटास्तनयगृहगताः सौम्यदृष्ट्या न दृष्टास्तावद्वर्षप्रमाणोनियतमिह भवेत्संततेर्वाविलम्बः ॥ १५ ॥

अर्थ-पापग्रह अथवा बृहस्पति ४ घरमें होवे अथवा ५। ८ घरमें चंद्रमा हो तो तीस वर्षतक संतान होनेका प्रबंध देरी रहे और जितने पाप ग्रह पांचवें घरमें बैठे हों शुभ ग्रहोंसे दृष्ट नहीं हों तो उतनेही वर्षोंतक निश्चय संतान होनेका विलंब कहना ॥ १५ ॥

तत्प्राप्तिर्धर्ममूला तदनु बुधकवी शंकरस्याभिषेकाचन्द्रश्चेत्तद्वदेव त्रिदिवपतिगुरुर्मंत्रयंत्रोपधीनाम् ॥ सिद्ध्या मंदारसूर्यो यदि शिखितमसी तत्र वंशेशपूजा कार्याम्नायोक्तरीत्या बुधगुरुनवपाः क्षिप्रमेवात्र सिद्धिः ॥ १६ ॥

अर्थ–तिस संतानकी प्राप्ति हरिवंशश्रवण संतानगोपाल मंत्र जप इत्यादिक धर्मसे होती है तहां ऐसा विशेष है कि बुध शुक्र संतानका विलंब करते हों तो शिवजीका अभिषेक (मंत्रपूर्वक) करवावे, चंद्रमा विलंबकारक हो तोभी यही विधि कराना, जो बृहस्पति संतानका निरोधक हो तो मंत्र यंत्र औषधी(लक्ष्मणादि)सेवन करानेकी सिद्धिसे संतान हो. शनि, मंगल, सूर्य, राहु इनमें जो एक कोई प्रतिबंधक होवे तो कुलदेवताका पूजन वेदोक्त रीतिसे करना. तहां बुध बृहस्पति जो ९ घरके पति हों तो (कुछ यत्नसे) शीघ्रही सिद्धि होवे ॥ १६ ॥

बुध हो तो हृदयपर, बृहस्पति हो तो नाभिके समीप व्रण चिह्न बताना ॥ १७ ॥

नेत्रे पृष्ठे च शुक्रो दिनकरतनयः स्यात्पदे चाधरे चेत्केतुर्वा सैंहिकेयस्तदनु तनुपतिर्भौमवित्क्षेत्रसंस्थः ॥ आभ्यामालोकितः सन् भवति हि कतिचित्स्थानगो वा तदानीं नेत्रे रोगी नरः स्यात्प्रवरमतियुतैर्होरिकैर्ज्ञेयमेवम् ॥ १८ ॥

अर्थ—शुक्र हो तो नेत्रपर, शनि हो तो पीठपर, राहु हो तो पैरके ऊपर, केतु हो तो होठपर व्रणका चिह्न बताना. अब नेत्रव्याधिके योगको कहते हैं कि लग्नका पति मंगल और बुधकी राशिपर स्थित हो इनसेही देखा जाता हो तो चाहे वह लग्नपति किसी स्थानमें पडा हो परंतु वह नर नेत्ररोगी है ऐसा दैवज्ञ जनोंने जानना ॥ १८ ॥

षष्ठेशे लग्नयाते भवति हि मनुजो वैरिहन्ता धनस्थे पुत्रात्तार्थोऽतिदुष्टः सहजभवनगे ग्रामदुःखाकरः स्यात् ॥ नाभिस्थाने च रोगी तनुनिधनपती शत्रुभावस्थितौ ना नेत्रे वामेतरे स्यात्सुरकुलगुरुः सूर्यजस्त्वंघ्रिरोगी ॥ १९ ॥

अर्थ—छठे घरका पति लग्नमें पडा हो तो जन्मवाला जन शत्रुको नष्ट करनेवाला हो और जो धनस्थानमें पडा हो तो पुत्रकरके धन हरा जावे, वह नर अत्यन्त दुष्ट हो, तीसरे घरमें जो छठे स्थानका पति हो तो ग्रामको दुःख देनेवाला

और नाभिकी जगह रोगवाला होता है, लग्न और आठवें घरका पति छठे घरमें हो तो वह नर बायें नेत्रमें रोगवाला हो और ६ । ८ वें घरमें शुक्र हो तो दहिने नेत्रमें रोग हो, शनैश्वर होवे तो पीठपर वा चरणपर रोग बताना ॥ १९ ॥

दन्ते दन्तच्छदे वा कुमुदपतिरिपुः संस्थितः षष्ठभावे केतुर्वा लग्ननाथः कुजबुधभवने संस्थितः क्वापि दृष्टः ॥ स्वेन प्रत्यर्थिना वा भवति जनुषि चेद्रासनाधे सरोगस्तौ भूमीसूर्यपुत्रौ यदि रिपुगृहगौ तद्भवः स्याद्गदो नुः ॥ २० ॥

अर्थ–जो यदि राहु केतु छठे घरमें हो तो दांतपर अथवा होठपर रोग बताना और मंगल तथा बुधकी राशिपर स्थित हुआ लग्नेश अपने शत्रुकरके पूर्ण दृष्टिसे देखा हुआ हो तो चाहे किसी घरमें भी होवे तोभी गुदाके समीपमें रोग होवे, जो यदि मंगल शनि छठे घरमें हो तो वह रोग ऐसे बताना कि मंगल हो तो रुधिरका विकार, शनि हो तो अन्यविकार बतावे ॥ २० ॥

प्रालेयांशौ रिपुस्थे खलखगसहिते मानवो रोगवान् स्यात्क्रूरैर्निष्पीडितश्चेत्तनुसदनगतः शीतरश्मिस्तदानीम् ॥ क्रूरे केन्द्रालयस्थे यदि शुभविहगैर्नेक्षिते रोगवान् स्यात्तस्मिन् काव्यालयस्थे कुजगुरुकविभिर्नेक्षिते तद्वदेव ॥ २१ ॥

अर्थ–जो यदि चन्द्रमा पापग्रहसे युक्त होके छठे घरमें बैठा होवे तो और शनि आदि क्रूर ग्रहोंकरके दृष्टि वा योग- करके पीडित होके लग्नमें चंद्रमा पडा तोभी रोगी हो. जो यदि क्रूर ग्रह केंद्रस्थानमें हो शुभ ग्रहोंकरके दृष्ट नहीं हो तो रोगी हो, वह क्रूर ग्रह शुक्रकी राशिपर हो मंगल शुक्र बृहस्पति इनकरके देखा नहीं गया हो तो रोगी होवे. यहां रोगकारक ग्रहके स्वभावके अनुसार कफ वात आदिकी बीमारी कहना ॥ २१ ॥

पुंलग्ने स्वीयतुङ्गे रिपुभवनपतौ वीक्षिते सन्नभो- गैरङ्गे नूनं नराणामरिजनवशतः स्याद्गदो गूढ- रूपः ॥रिःफस्थाने स्थिते चेदरिसदनपतौ सिंहि- कापुत्रयुक्ते किंवा सप्ताश्वयुक्ते परगृहवसतिर्नीच- वृत्तिर्नरः स्यात् ॥ २२ ॥

अर्थ–छठे घरका पति पुरुष लग्नकी राशिपर हो वा स्वोच्चका हो पापग्रहोंकरके दृष्ट होवे तो मनुष्योंके शरीरमें शत्रु- ओंकरके किया हुआ गुप्त रोग बताना. छठे घरका पति राहुसे युक्त होवे अथवा सूर्यसे युक्त होवे अथवा १२ वें घरमें स्थित होवे तब वह जन पराये घरमें रहनेवाला तथा नीचवृत्तिवाला होय ॥ २२ ॥

अथ विवाहयोगः ।

यावन्तो वा विहङ्गा मदनसदनगाश्चेत्रिजाधीश- दृष्टास्तावन्तो निर्विवाहास्त्वथ सुमतिमता ज्ञेय-

मित्थं कुटुम्बे ॥ कार्यो होरागमज्ञैरधिकबलवतां खेचराणां हि योगादादेश्यं तत्र वीर्यं रविविधुकुभुवामङ्गदिक्शैलसंख्यम् ॥ २३ ॥

अर्थ–जितने ग्रह सातवें घरमें स्थित हों सप्तमेशकरके दृष्ट हों उतनेही विवाह पुरुषके होने चाहिये. उत्तम बुद्धिवाले दैवज्ञने इसी प्रकार कुटुंबमें पिता भाई आदिकोंकेभी विचारने. जातकशास्त्रवेत्ता पंडितजनोंने अधिक बलवाले ग्रहोंके योगसेभी विचार करना जैसे षड्बलमें सूर्यके छः रूप हैं, चंद्रमाके दश हैं, मंगलके ७, अन्योंमें ६ हैं, इनमें यथाक्रमसे ये ग्रह बली होते हैं ऐसा विचार करना ॥ २३ ॥

केन्द्रस्था वा त्रिकोणे यदि खलु गृहिणीकारकाख्या नभोगाःकामार्थेशौ निजर्क्षे परिणयनविधिः स्यात्तदानीं तुरेकः ॥ जायाधीशः कुटुम्बाधिपतिरपि युतश्चेत्रिके गर्हिताख्यैर्यावद्भिः शुक्रयुक्तो नियतमिह भवेत्तावतीनां विरामः ॥ २४ ॥

अर्थ–स्त्रीकारक (शुक्र, चंद्र, गुरु, बुध) ग्रह केंद्रमें स्थित हों अथवा ९।५ घरमें स्थित होवें और सातवें दूसरे घरका पति अपने घरोंमें होय तो एकही विवाह होना कहे और सप्तम भावका पति अथवा दूसरे घरका पति शुक्रसे युक्त होके जितने क्रूर ग्रहोंकरके दृष्ट हुआ त्रिक ६ । ८ । १२ घरमें पडा हो उतनीही स्त्रियोंकी मृत्यु होय ॥ २४ ॥

अथ गर्भस्रावयोगः ।

लग्नस्थे सप्तसप्तौ दिनमणितनये कामगे चार्कम-
न्दौ द्यूने चन्द्रे नभःस्थे नच यदि गुरुणालोकिते
नो प्रसूते ॥ द्वेष्येशो मित्रमन्दौ द्विपि सितकिर-
णेऽस्ते बुधेनेक्षिते नो सूते द्वेष्ये जलर्क्षे यदि कुज-
रविजौ गर्भिणी स्यान्न नारी ॥ २५ ॥

अर्थ–सूर्य लग्नमें हो, शनि सातवें घरमें हो यह १ योग और सूर्य शनि सातवें होवे, बृहस्पतिकी दृष्टिसे रहित हुआ चंद्रमा दशवां होय यह दूसरा योग इन दोनों योगोंके होनेसे तिस पुरुषकी स्त्री संतान नहीं जने और छठे घरका पति तथा सूर्य शनि छठे घरमें हों बुधकरके दृष्ट होवें और चंद्रमा सातवें घरमें होवे तो स्त्री संतान नहीं जनेगी और जो मंगल शनि छठे घरमें हों अथवा चौथे घरमें हों तो स्त्री गर्भवती नहीं हो ऐसे ये चार वंध्यायोग हैं (पुरुषके ग्रहोंसे सब फल जानना) ॥ २५ ॥

अथाष्टमभावयोगः ।

रन्ध्रस्थानस्थिता वा स्थिरभवनगताःशुक्रवागी-
शसौम्याः कृच्छ्राणां कर्मणां ना भवति हि निय-
तं कारकः स्तब्धभावः ॥ बाल्ये दुःखी नरः
स्यान्निधनगृहपतौ लग्नयाते सुखी स्यात्पश्चात्
पापेऽल्पमायुः शुभखगसहिते दीर्घमायुर्नरा-
णाम् ॥ २६ ॥

अर्थ-शुक्र बृहस्पति बुध ये आठवें घरमें हों अथवा स्थिरराशिपर होवें तो निरंतर कष्ट (कठोर) कर्म करनेवाला और कठिनचित्तवाला होवे और अष्टमभावका पति ११ घरमें हो तो बाल्य अवस्थामें दुःखी रहे पीछे सुखी होवे और ८ घरका पति पापग्रह हो ११ घरमें बैठा हो तो अल्प आयु कहे. जो यदि वह शुभ ग्रहसे युक्त होके बैठा हो तो दीर्घ आयु बताना ॥ २६ ॥

कुर्यादायुर्गृहेशः खलखगयुगरिप्रान्त्यसंस्थोऽल्प-
मायुश्चेल्लग्नाधीशयुक्तोऽतिधनभवनपः स्वल्प-
मायुः प्रदत्ते ॥ रन्ध्रस्थो वा चिरायुस्तदनु रवि-
भवस्तत्र तद्वल्लयेशः क्लेशस्थानस्थितश्चेज्जनुपि
हि मनुजो वैरियुक्तस्तस्करः स्यात्॥ २७ ॥

अर्थ-आठवें घरका पति क्रूरग्रहसे युक्त होके छठे और १२ वें घरमें हो तो अल्प आयु बताना, जो यदि ८ घरका पति लग्नेशकरके युक्त होके ६ । १२ वें घरमें हो तो स्वल्प आयु करता है और आठवें घरका पति आठवें घरमेंही हो अथवा ८ वें घरमें शनि हो तो दीर्घ आयु होवे, जो यदि अष्टम घरका पति धनस्थानमें जन्मसमयमें पडा हो तो वह मनुष्य चोर हो और शत्रुकरके युक्त रहे ॥ २७ ॥

आयुर्देहाधिनाथौ निधनरिपुगतौ हीनवीर्यौ
प्रसूतौ संग्रामे कीर्तिशेषं व्रजति बलयुतौ तौ

सदा तज्जयास्तिम् ॥ शुक्रेणान्दोलिकायास्तनुपवि-धियुतो वाहनस्थाननाशो मूर्तौ दन्तावलेन्द्रैरथ भो गुरुसहितः स्याज्जयो वाजिवाहैः ॥ २८ ॥

अर्थ-जिसके जन्मसमय हीन बलवाले हुए लग्नेश और अष्टम घरका पति ६।८ वें घरमें हो तो वह नर युद्धमें उलटा होके मृत्युको प्राप्त होता है वेही ८ । १ के पति बली होवे तो युद्धमें विजय पानेवाला हो, चौथे घरका पति शुक्रसे युक्त होवे तो पीनसमें बैठा हुआ विजय पावे और चौथे घरका पति लग्नेश और चंद्रमाकरके युक्त हो लग्नमें स्थित होवे तो महाहस्तियोंकरके विजय पावे अथवा चौथे घरका पति बृहस्पतिसे युक्त होके लग्नमें पडा हो तो घोडे और हस्तियोंकरके विजय पावे ॥ २८ ॥

अथ नवमभावयोगः ।

भाग्येशो मूर्तिवर्ती सुरपतिगुरुणालोकितो भूपवन्द्यो लग्नस्थो वाहनेशो नवमपतिरुभौ पश्यतश्चेत्स्वगेहम् ॥ सर्वासामास्पदं स्यान्मनुज इह तदा सम्पदां वाहनेन्द्रो रन्ध्रस्थानस्थितश्चे-द्व्रजति हि मनुजो भाग्यराहित्यमेवम् ॥ २९ ॥

अर्थ-नवें घरका स्वामी बृहस्पति दृष्ट होके लग्नमें पडा हो तो जन्मनेवाला जन राजाओंसे मान्य हो, नवें घरका पति लग्नमें बैठा हो और चौथे घरका पति, तथा नवें घरका

पति, दोनों अपने २ घरको पूर्णदृष्टिकरके देखते हों तो वह मनुष्य संपूर्णसंपत्तियोंका आश्रय हो अर्थात् सर्वसंपत्तिमान् हो और चौथे घरका पति आठवें घरमें बैठा होय तो वह मनुष्य भाग्यहीन होता है ॥ २९ ॥

हीनानां वाहनानां तदनु चपलताप्राप्तिरेवं नराणां
ज्ञेया होरागमज्ञैरथ नवमपतौ लाभगे राजवन्द्यः।
दीर्घायुर्धर्मशीलस्तदनुधनवपुर्वाहनेशः स्वगेहे
धर्मेशो लग्नवर्ती जनुषि यदि गजस्वामिसिंहास-
नानाम् ॥ ३० ॥

अर्थ—इस श्लोकमें कही हुई भाग्यहीनताका लक्षण यह है कि अवस्था बल आदिसे रहित हुए वाहनोंकी प्राप्ति हो फिर चपलता हो अर्थात् स्थिरभी नहीं रहे ऐसे होराशास्त्रके जाननेवालोंको बताना चाहिये और नववें घरका पति ११ घरमें पडा हो तो राजासे मान्य दीर्घ आयुवाला तथा धर्म स्वभाववाला होवे फिर जन्मसमयमें धन २ लग्न १ चतुर्थ ४ इन घरोंके पति अपने २ घरोंमें स्थित होवे तो और ८ घरका पति लग्नमें पडा हो तो हस्ती राज्यसिंहासन आदिकों-की प्राप्ति होय ॥ ३० ॥

योगानां स्यादमीषां प्रचुरबलयुतो योऽधिपस्तद्-
शायां लब्धिश्चान्तर्दशायामथ गुरुभृगुजौ वाहना-
धीशयुक्तौ ॥ केन्द्रे याने त्रिकोणे त्वथ गुरुकवि-

युग्वाहनस्थानगो वा भाग्याधीशः स्वराशौ भवति नरपतिर्वाहनव्यूहनाथः ॥ ३१ ॥

अर्थ-इन कहे हुए तथा अग्रे वक्ष्यमाणयोगोंको करनेवाला जो ग्रह अधिक बलवान् हो तिसकी दशा अंतर्दशामें वह फल होगा ऐसा जानना और बृहस्पति शुक्र चौथे घरके स्वामीसे युक्त होके केन्द्रमें अथवा ११ में होवे अथवा ८ । ५ घरमें होवे तो अथवा बृहस्पति शुक्रसंयुक्त हुआ ९ घरका पति चौथे घरमें वा अपने घरमें हो तो वाहनोंके समूहका पति राजा हो ॥ ३१ ॥

कर्मस्थे क्षेत्रचिन्ता त्रिकभवनगते सौख्यचिंता महीजे वागीशे यानभूषावसनहयभवा चामरच्छत्रचिन्ता ॥ प्रालेयांशौ सिते स्यादथ मदनगते वाक्पतौ पुत्रचिन्ता संतानस्थानयाते हिमकरतनये बुद्धिजाथ त्रिकोणे ॥ ३२ ॥ मार्तण्डे तातबन्धोरथ सुतनवमद्यूनगे दानवेज्ये यात्राचिन्ता नराणामथ नवमसुते पुत्रजा वासवेज्ये ॥ कर्माधीशो विवीर्यो यदि जनुषि तदा सर्वकर्मास्पदं नो गेहे स्वीये यदासौ शुभविगहयुतो मानदो मानशीलः ॥ ३३ ॥

अर्थ-दशवें घरमें मंगल हो तो खेतकी चिंता रहे त्रिक (६।८।१२) घरमें मंगल हो तो सब वातोंके सुखकी

चिंता बनी रहे और ६ । ८ । १२ । घरमें बृहस्पति हो तो वाहन, आभूषण, वस्त्र, घोडा इनकी चिंता बनी रहे चंद्रमा अथवा शुक्र ६ । ८ । १२ घरमें हो तो चंवर छत्र इनकी प्राप्ति रक्षाकी चिंता बनी रहे और जो बृहस्पति सातवें घरमें हो तो पुत्रकी चिंता बनी रहे, ५ घरमें बुध हो तो बुद्धिकी चिंता बनी रहे और ९ । ५ घरमें सूर्य हो तो पिता भाईकी चिंता बनी रहे और ५ । ९ । ७ इन घरोंमें शुक्र हो तो यात्राकी चिंता बनी रहे, जो यदि नवें पांचवें घरमें (अपनी राशिका होके) बृहस्पति पडा हो तो मनुष्योंके पुत्रकी चिंता रहे, जो यदि जन्मसमयमें दशवें घरका पति निर्बल होय तो सब कामोंको सिद्ध करनेवाला न होवे अर्थात् जन्मकालमें १० घरका पति बली हो तो वह सब कामोंको सिद्ध करनेवालाही हो, यदि १० घरका पति शुभसे युक्त होके १० घरमें पडे तो वह मनुष्य मानवाला हो ॥ ३२ ॥ ३३ ॥

लाभे केन्द्रे त्रिकोणे तनुनिधनभवस्थानपाः संस्थिताश्चेद्दीर्घायुः पापखेटाः पणफरादिबुकत्रिस्थिता मध्यमायुः ॥ हीनायुः प्रोक्तमेते यदि जनुषि नृणां स्युस्तदापोक्लिमस्था रन्ध्रस्थानस्थितानां तनुपनिगमनस्वामिमूर्यात्मजानाम् ॥ ३४ ॥ यो हीनस्तद्दशायुस्त्वथ निजभवने धर्मकर्मात्मजेशाश्चेत्स्युस्तेषांदशायां बहुधनबलयशाढ्यमंबुद्धि-

नराणाम् ॥ हानिः स्यादन्यथारौ तनुनिधनपती भानुपुत्रेण युक्तौ स्यातां स्वर्भानुना चेत्तदनु च शिखिना तद्दशायां व्रणाः स्युः ॥ ३५ ॥

अर्थ--मनुष्योंके जन्मसमयमें लग्न अष्टम दशम इन घरोंके पति १ १ और केंद्रमें और ९ । ५ घरमें होवें तो दीर्घआयुवाला हो और जो पापग्रह पणफर २ । ८ । ११ इन घरोंमें या ३ । ४ घरमें हो तो मध्यम आयु होवे और ये पूर्वोक्त ग्रह ३ । ६।९ । १२ इन घरोंमें होवे तो अल्पआयु होय तहां ३२ वर्षसे नीचे अल्प आयु, पीछे मध्यमआयु, ६४ वर्षसे अधिक दीर्घ आयु होती है, आठवें घरमें स्थित लग्नेश दशम घरका पति शनि इनमेंसे जो ग्रह हीनबलवाला हो तिसकी दशापर्यंत आयु होवे और ९।१०।५ इन घरोंके पति अपने२ घरोंमें अर्थात् इन्ही घरोंमें होवें तो इनमें जो अधिक बलवाला होवें उसकी दशामें मनुष्योंकी धर्ममें वृद्धि होती है अन्यथा कहिये अन्य घरोंमें परे हो तो अधिक बलवालेकी दशामें धर्मकी हानि हो, लग्न और ८ घरका पति, ये दोनों ग्रह शनि राहु केतु इनमेंसे एक किसीसे युक्त होवे और छठे घरमें बैठे हों तो इन १।८ घरके पति ग्रहमें जो अधिकबलवान् हो उसीकी दशामें व्रण (घाव आदि) होय ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

यानेशस्तत्र संस्थो यदि भवति तदा यानहेतुर्मृतिः स्याच्चोराच्छस्त्रेण चिन्ता नवमभवनतो

भाग्यजाता विधेया ॥ व्योम्नो भूपालभूपावसन-
द्वयमहत्कर्मणां प्राप्तिचिन्तालाभस्थानेऽखिलानां
व्ययनिधनगृहात्कल्मषाणां विधेया ॥ ३६ ॥

अर्थ-जो यदि चौथे घरका पति छठे घरमें हो तो सवारी (वाहन) हेतुसे चोरसे वा शत्रुसे मृत्यु हो (शनिके योगसे वाहनसे, राहुके योगसे चोरसे, केतुके योगसे शस्त्रकरके मृत्यु बतानी) और नवम घरमें भाग्यकी चिंता (शुभाशुभ फल) विचारना और दशवें घरसे राज्यसंबंधका काम, आभूषण, वस्त्र, घोडा इत्यादिक वडे कामोंका फल विचारना, ग्यारहवें घरसे संपूर्ण लाभों (प्राप्तियों) की चिंता विचारनी, बारहवें घरमें मलिन कामोंकी चिंता विचारनी, शुभाशुभ ग्रहोंकी दृष्टि और इन स्थानोंके स्वामियोंके विचारसे शुभाशुभ फल कहे. टीकामें विस्तारपूर्वक अन्य ग्रंथोंका मत लिखा है ॥ ३६ ॥

लग्नस्थे रिःफनाथे भवति सुवचनो मानवो रूप-
वान्वा स्वर्क्षे कार्पण्यबुद्धिर्बहुतरपशुमान् ग्राम-
युक्तः सदा स्यात् ॥ धर्मे तीर्थानुलोकी बहुलवृ-
षभैः क्रूरयुक्ते च पापी मिथ्याशो शान्तकृत्स्या
न्नियतमिति ज्ञेयमेवं सुधीभिः ॥ ३७ ॥

अर्थः-बारहवें घरका पति लग्नमें बैठा हो तो वह मनुष्य सुन्दर वाणीवाला तथा सुन्दररूपवान् हो और अपने घरमें हो तो कृपणबुद्धिवाला होय अनेक पशुओंवाला तथा सदा ग्रामका

अधिकारी रहे और ८ घरमें हो तो तीर्थयात्रावान् तथा बहुतधर्ममें अत्यंत बुद्धि रक्खे और जो पापग्रहसे युक्त होके पडा हो तो पापी हो संचितद्रव्यका नाश करे इस प्रकारके योगसे यह फल पंडितजनोंने नियमकरके जानना ॥ ३७ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोषेऽलंकाराख्ये जातके मञ्जुलेऽस्मिन् ॥ भावाध्यायः श्रीगणेशेन वर्यैर्वृत्तैर्युक्तः शैलरामैः प्रणीतः ॥ ३८ ॥

इति श्रीजातकालंकारे भावफलाध्यायो द्वितीयः ॥ २ ॥

अर्थ-पंडितजनोंको संतुष्ट करनेवाले तथा मनोहरछंदों करके रचे हुए अतिसुंदर इस जातकालंकारविषे श्रीगणेशकविने उत्तम सैंतीस (३७) श्लोकोंकरके भावाध्याय रचके समाप्त किया है ॥ ३८ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथ योगाध्यायः।

ग्रहाधीना योगाः सदसदशुभैर्जाता जनिमतां ततो योगाधीनं फलमिति पुराणैः समुदितम् ॥ अतो वक्ष्ये योगान् सकलगणकानन्दजनकान् शुका- स्याद्युद्भूतं मतमहमिलोक्येह रुचिरम् ॥ १ ॥

अर्थ–प्राचीन ऋषियोंकरके कहा हुआ फल योगोंके अधीन कहा है और वे योग ग्रहोंके अधीन हैं तथा जन्मनेवालोंके शुभाशुभ फलको कहनेवाले हैं इसलिये श्रीशुकदेवजीके मुखसे निकले हुए सुंदर मतको अच्छी तरह देखके संपूर्ण ज्योतिषियोंके आनंददायक योगोंको कहूंगा ॥ १ ॥

ऋक्षेशः क्षीणवीर्यः सुतनवमगतो मानवो मन्युमान्वै राशीशे साङ्गनाथे रिपुनिधनगृहे प्रान्त्यगे दुर्बलः स्यात् ॥ धर्मद्वेष्याष्टनाथाः खलखचरयुताः स्थानके क्वापि संस्थास्तैर्दृष्टाः स्यात्तदानीं परपुरुषरता सुन्दरी तस्य पुंसः ॥ २ ॥

अर्थ–जन्मराशिका पति क्षीणबलवाला हो ५ । ८ स्थानमें पड़ा हो तो जन्मनेवाला नर क्रोधी होय और जन्मराशिका पति लग्नपतिके संग होके ६ । ९ । १२ इन घरोंमें बैठा हो तो यह नर दुर्बल होवे और ९ । ६ । ८ इन घरोंके पति क्रूरग्रहोंसे युक्त हो अथवा क्रूरग्रहोंकी दृष्टिसे युक्त होके किसी स्थानमें पड़े हों तो उसकी स्त्री जारिणी (व्यभिचारिणी) होवे ॥ २ ॥

मातृस्थाने स्थितो चेत्कुजरविगुरवश्चेत्तदा पट्टरन्ध्राधिनाथो स्यातां यस्य प्रसूतौ भवति खलु नरस्तन्यपानस्तदानीम् ॥ क्वापि स्थाने स्थितौ स्तः

कलुषखगयुतौ भाग्यरन्ध्राधिनाथौ चेदेवं राहुणा वा तदनु च शिखिना संयुतावन्यजातः ॥ ३ ॥

अर्थ–जिसके जन्मसमय छठे आठवें घरके पति मंगल और चंद्रमासे युक्त होके चौथे घरमें स्थित होवें तो वह नर अन्यपुरुष (जारपुरुष)से उत्पन्न हुआ जानना और ८ । ६ घरके पति पापग्रहोंकरके युक्त तथा राहुकेतुसे युक्त होके किसी स्थानमें स्थित होवें तोभी वह नर पितासे अन्य पुरुषसे उत्पन्न हुआ जानना ॥ ३ ॥

युक्तौ मन्देन शूद्रादथ भवति विदा वैश्यतो भास्करेण क्षत्राज्जातः क्षितेन त्रिदशपगुरुणा भूमिदेवात्प्रसूतः ॥ दैत्येशेज्यौ सपापौ मदनरिपुधनस्थानगौ चेत्परस्त्रीगामी व्योमारिपौ स्तो गगनभवनगौ तात्पिताऽन्यारतः स्यात् ॥ ४ ॥

अर्थ–वह ८ । ६ घरके पति शनिकरके युक्त हों तो शूद्रकरके उत्पन्न भया है, बुधसे युक्त हो तो वैश्यसे उत्पन्न भया सूर्यसे युक्त हो तो क्षत्रियकरके उत्पन्न भया और शुक्रकरके युक्त हो तथा बृहस्पतिसे युक्त हो तो ब्राह्मणसे उत्पन्न भया है । इन शुभग्रहोंका योग पापग्रहोंके साथ होनेसे अथवा ये नीचके होवें तब जानना और शुक्र, बृहस्पति पापग्रहोंकरके युक्त होके ७।६।२ इन घरोंमें पडें तो जन्मनेवाला जन परस्त्रीगामी (जार) होवे दशवें और छठे घरके

१ अत्र मूले भाग्यपद्मधिनाथौ इति पाठः कर्तव्य ।

पति १० घरमें स्थित हों तो उसका पिता अन्यस्त्रीके संग रमण करनेवाला जानना ॥ ४ ॥

मूर्तीशः पापयुक्तो धनसदनगतश्चेत्तदा सज्जनस्त्री-
संयुक्तस्तत्पिता स्याद्खलविहगयुताः कामशत्रुस्व-
नाथाः ॥ कोशस्थास्तद्वदेवं फलमिति विविधं
भ्रातृपत्न्योश्च पित्रोः स्थानेशाः क्वापि भावे तनु-
पतिसहिताश्चेत्पुमानन्यजातः ॥ ५ ॥

अर्थ—लग्नका पति पापग्रहसे युक्त होके २ घरमें स्थित हो तो उसका पिता उत्तमजनकी स्त्रीके संग रमण करता है और ७ । ६ । १२ इन घरोंके पति पापग्रहोंसे युक्त होके दूसरे घरमें स्थित होवे तोभी यह फल जानना इस प्रकारसे अनेक प्रकारके (दुराचारफल) जानने और ३ । ७ । ४ । १० इन घरोंके पति लग्नपतिके संग होके किसी घरमें पडे हों तो वह जन अन्य पुरुषसे उत्पन्न हुआ जानना ॥ ५ ॥

लग्नाधीशेन्दुपुत्रौ क्षितितनयनिशानायकौ क्वापि
संस्थौ युक्तौ स्वर्भानुना वा भवति हि मनुजः
केतुना श्वेतकुष्ठी ॥ आदित्यो भौमयुक्तस्तदनु
शनियुतो रक्तकृष्णाख्यकुष्ठी सार्कौ लग्नाधिनाथो
व्ययरिपुनिधनस्थानगस्तापगण्डः ॥ ६ ॥

अर्थ—लग्नका पति और बुध अथवा मंगल, चंद्रमा, राहु-करके अथवा केतुकरके युक्त होके किसी स्थानमें पडे हों तो

१ अत्र मूले खलविहगयुता इति पाठः परंत्वयः ।

जन्मनेवाला नर श्वेतकुष्ठी होवे और, मंगलशनिकरके युक्त सूर्य कहीं स्थित हो तो रक्तकुष्ठी वा कृष्णवर्णका कुष्ठवाला होय और सूर्यसहित हुआ लग्नका पति १२ । ६ । ८ वे घरमें स्थित होवे तो ताप और गंडमाला रोगसे युक्त होवे ॥ ६ ॥

ज्ञेयश्चन्द्रेण गण्डो जलज इह युतो ग्रन्थिशस्त्रव्रणः स्याद्भूमीपुत्रेण पित्तं हिमकरतनयेनाथ जीवेन रोगः॥ आमोद्भूतस्ततश्चेद्भृगुतनययुतो नुः क्षयाख्यो गदःस्याच्चोरोद्भूतोऽन्त्यजाद्वा यमशिखितमसामेकयुक् तन्वधीशः ॥ ७ ॥

अर्थ—चंद्रसे युक्त हुआ लग्नपति त्रिक (६ । ८ । १२) घरमें स्थित हो तो जलसे उत्पन्न हुआ गंडमालारोग होवे, मङ्गलसहित लग्नेश ६ । ८ । १२ घरमें स्थित हो तो ग्रंथि, शस्त्र आदिकका घाव होवे, बुधसे युक्त हुआ लग्नेश ६ । ८ । १२ में हो तो पित्तरोग हो, बृहस्पतिसे युक्त होके स्थित हो तो आमरोग होय, शुक्रकरके युक्त हो तो मनुष्यके क्षयी रोग कहना और शनि, राहु, केतु इनमेंसे एक किसीसे युक्त होके लग्नेश ६ । ८ । १२ घरमें पडे तो चोरसे अथवा नीचजातिसे उत्पन्न हुआ रोग जानना ॥ ७ ॥

चन्द्रो मेषे वृषे वा कुजशनिसहितः श्वेतकुष्ठी सरोगो दैत्येज्यारेन्दुमन्दास्त्रिभवनगताः कर्कटालिस्थिता वा ॥ अङ्गे सौख्येन हीनः परमकलुषकृद्रक्तकुष्ठी नरः स्याद्वागीशो भार्गवो वा

यदि रिपुगृहपो मूर्तिगः क्रूरखेटैः ॥ ८ ॥ दृष्टश्चे-
द्रक्शोफी त्वथ खलसहिता मीनकर्कालिभावा
लूताकारश्चिरं स्यात्परमगदकरः कुष्ट एवं नरा-
णाम्॥रिःफस्थानस्थितश्चेद्विबुधपतिगुरुर्युतरोगी
नितान्तं भूमीमार्तण्डपुत्रौ व्ययभवनगतौ शत्रुगौ
वा व्रणी स्यात् ॥ ९ ॥

अर्थ—मंगल शनिमे युक्त वा वृष चंद्रमा मेष राशिपर स्थित हो तो वह श्वेतकुष्ठी रोगी होय और शुक्र, मंगल, शनि ये मीनराशिके अथवा कर्कराशिपर वा वृश्चिकराशिपर स्थित होवें तो उसको शरीरका सुख नहीं होवे, महापातकी और रक्तकुष्ठी होवे. जो यदि बृहस्पति अथवा शुक्र वा छठे घरका पति क्रूर ग्रहोंकरके दृष्ट हो और लग्नमें स्थित होय तो मुखपर सोजा (रसोली आदि) होवे और मीन, कर्क, वृश्चिक इन राशियोंवाले भाव (कोईभी घर) क्रूर ग्रहोंसे संयुक्त होवे तो लूताकार (मकडीके जालासदृश) अत्यंत कुष्टरोग होवे, बृहस्पति बारहवें स्थानमें स्थित होवे तो गुदाका रोगवाला अथवा गुप्तरोग जो कि वैद्यकी समझमें न आवे ऐसा रोग निरंतर रहे, मंगल सूर्य १२ । ६ घरमें होवे तो व्रण (घाव) स्फोटक-पिडसे युक्त हो ॥ ८ ॥ ९ ॥

मेषे मीने कुलीरे तदनु च मकरे वृश्चिके मन्द-
चन्द्रौ स्यातां क्रूरान्वितौ चेन्नवपभवनगो मानवः

स्याच्च सञ्ज्ञः ॥ लग्नस्थः पश्यतीन्दुं दिनमणितनयं भूमिजो द्यूनदृष्ट्या बुद्ध्या हीनो नरः स्याद्दिनविधुविवरे भूमिजश्चेत्तथैव ॥ १० ॥

अर्थ-क्रूरग्रहसे युक्त[१] हुए शनि, चंद्रमा मेष, मीन वृश्चिककर इन राशियोंपर स्थित हों और नववें घरमें पडे हों तब जन्मनेवाला जन लंगडा लूला होवे और लग्नमें स्थित हुए चंद्रमाको अथवा शनिको सप्तम दृष्टिकरके मंगल देखता हो तो वह नर बुद्धिहीन होवे और सूर्य चंद्रमाके १०में मंगल पडा हो तो भी बुद्धिहीन बताना ॥ १० ॥

प्रालेयांशौ तनुस्थे गगनसदनगे साधिकारेऽर्कसूनौ दृष्टेऽस्मिन्कामदृष्ट्या हिमकिरणभुवा बुद्धियुङ् मानवः स्यात् ॥ पृथ्वीसूनुं मृगाङ्कं तनुनिलयगतं पूर्णदृष्ट्येन्दुसूनुः पश्येच्चेद्बुद्धिहीनस्त्वथ शशितनुपौ भूभुवा पीडितौ वा ॥ ११ ॥

अर्थ-चंद्रमा लग्नमें स्थित हो और साधिकार अर्थात् अपना घर, होरा, द्रेष्काण, नवांशक आदि आधिपत्यसहित हुआ शनि दशवें घरमें होवे और पूर्णदृष्टिकरके बुधसे दृष्ट होवे तो वह मनुष्य बुद्धिमान् होवे, जो यदि लग्नमें स्थित हुए मंगलको और चन्द्रमाको पूर्ण दृष्टिकरके बुध देखता होवे तो वह नर बुद्धिसे हीन हो अथवा चन्द्रमा और लग्नका स्वामी ये दोनों मंगलसे पूर्णदृष्टि करके पीडित होवें तो बुद्धिहीन होवे ॥ ११ ॥

१ अत्र मूले लग्नस्थं इति पाठः कर्तव्यः।

लग्नस्थे रौहिणेये तदनु रविशनी क्रूरदृष्टौरिपुस्था-
वेकर्क्षे चैकभागे भवति गतमतिर्दृष्टिहीनौ शुभा-
नाम् ॥ तिग्मांशौ वैरिनाथे खलविहगयुते तुर्यगे
सूर्यसूनौ हृद्रोगी वाक्पतौ वा भवति हृदि नरः
कृष्णपित्ती सकम्पः ॥ १२ ॥

अर्थ–बुध लग्नमें स्थित होवे और पापग्रहोंसे दृष्ट तथा शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे रहित हुए सूर्य, शनि एक राशिपर स्थित होवें अथवा एक नवांशकपर स्थित हों और संग हुएही छठे घरमें पडे होवें तो वह नर बुद्धिहीन होवे. छठे घरका पति सूर्य पापग्रहसे युक्त होके चौथे घरमें बैठा होय तो हृदयमें रोगवाला होवे. शनि अथवा बृहस्पति छठे घरके पति हों और पापग्रहोंसे युक्त होके चौथे घरमें बैठे होंय तो हृदयमें कृष्ण-पित्त रोगवाला हो अथवा दुष्टजनों करके पीडित हुआ हृदयमें कंपरोगवाला होता है ॥ १२ ॥

दुष्टैर्वा पीडितः सन्नथ कुजरविजौ वाक्पतिर्बन्धुसं-
स्थो हृद्रोगः स्यान्नराणां व्रण इह नियतं क्लेश-
कारी शरीरे ॥ पातालस्थो महीजस्तनयानिल-
यगाः सूर्यविरसौंहिकेया रन्ध्रस्थो भानुपुत्रो यदि
जनुषि तदा स्यान्नरो दुःखभागी ॥ १३ ॥

अर्थ–परन्तु जो यदि मंगल, शनि, बृहस्पति ये चौथे घरमें स्थित होवें तो मनुष्योंके इस योग होनेमें हृदयके

रोमके हेतुसे शरीरमें क्लेशकारी व्रण (घाव) हो जाता है मंगल सातवें स्थित हो और सूर्य, बुध, राहु ये पांचवें घरमें स्थित हों, शनि आठवें घरमें हो तो जन्मनेवाला नर दुःख भोगता है ॥ १३ ॥

लग्नं पश्येन्निजर्क्षे यदि धरणिसुतः संस्थितः कातरः स्याच्छायासूनुर्नभःस्थो यदि निशि जननं तद्वदत्रापि वाच्यम् ॥ मूर्तौ भूमीतनूजे स्वजनककलहकृत् द्यूनगे स्वाधिकाराद्धीने भौमे वपुष्मान् परमयुधि रतस्तीक्ष्णभावश्च नूनम् ॥ १४ ॥

अर्थ—अपने क्षेत्रमें बैठा हुआ मंगल जो यदि लग्नको देखता हो तो जन्मनेवाला नर डरपोक (भीरु) होता है यदि शनि दशवें घरमें हो और रात्रिमें जन्म भया हो तोभी वह नर डरपोक होता है. लग्नमें मंगल होय तो मित्रस्वजनोंके साथ कलह करनेवाला हो और अपना घर, होरा, द्रेष्काण, नवांश आदिसे रहित होके सातवें घरमें बैठा होय तौ दृढशरीरवाला, युद्धमें अत्यंत प्रीति रखनेवाला और तेजस्वभाववाला निश्चयकरके होता है ॥ १४ ॥

पश्येतां कामदृष्टया धरणिविधुसुतौ चेन्मिथः स्यात्तदानीमुच्चाकारोऽथ चन्द्रं शनिरविमहिजा श्चेत्प्रपश्यन्ति शीतः ॥ क्षीणे प्रालेयभानौ धरणिजसहिते पापभूमौ खरः स्यान्मूर्तिस्थो द्यूनदृ-

दृष्टा हिमकरतनयो वासवेज्यं प्रपश्येत् ॥ १५ ॥
हास्यासक्तः सभौमे हिमकरतनये स्याच्छुभर्क्षे
कुजज्ञौ मन्दर्क्षे वार्कदृष्टौ नरपतिविदुषां रञ्जने
कोविदः स्यात् ॥ पश्येत्काव्यं सितांशुर्व्ययवि-
लग्नारिपुस्थानगो विस्मयालुः क्षिप्रं वाक्स्फूर्तिमान्
स्यात् कुजबुधशशिनो वीर्यवत्खेटदृष्टाः ॥ १६ ॥

अर्थ--मंगल, बुध ये आपसमें सातवें भवनकी दृष्टिकरके परस्पर देखते होवें तो जन्मनेवाला जन उच्च (ऊंचे) शरीर-वाला होता है और शनि, सूर्य, मंगल पूर्णदृष्टिकरके चन्द्र-माको देखते होवें तो जन्मनेवाला जन शीतल हो अर्थात् मूर्ख होता है. यदि क्षीण चन्द्रमा मंगलसहित होके पडा हो तो पाप करनेवाला और तेजस्वभाववाला होय. जो यदि लग्नमें स्थित हुआ बुध सातवें घरमें स्थित हुए बृहस्पतिको देखता हो तो जन्मनेवाला जन हास्य (ठट्ठा) करनेमें आसक्त रहे. जो यदि मंगलसहित हुआ बुध शुभग्रहकी राशिपर स्थित हो अथवा मंगल, बुध ये दोनों शनिकी राशिपर स्थित हों और सूर्यकरके देखे गये होवें तो राजाओंके और पंडितोंको प्रसन्न करनेमें चतुर (निपुण) होता है और ६ । ८। १२ इन घरोंमें स्थिर हुआ चंद्रमा शुक्रको देखता होय तो विस्मय (आश्चर्य) युक्त रहनेवाला होता है. जो यदि मंगल, बुध, चंद्रमा ये बलिष्ठग्रहोंकरके देखे गये हों तो जन्मनेवाला जन

वचन बोलनेकी स्फूर्ति (शीघ्रता) वाला होवे ॥१५॥१६॥

शुक्रज्ञौ द्यूनयातौ गगनविलयगौ मानवः पुंश्चलः
स्यात् कामाज्ञामन्दिरस्थौ कविधरणिसुतौ तद्व-
दाज्ञाम्बुयातौ ॥ काव्यारौ तद्वदिन्दोर्नभसि रवि-
सुतादास्फुजिन्नारयायी तद्वत्कामास्पदस्था बुधसि-
तशनयः स्वर्क्षगे भार्गवे हि ॥१७॥

अर्थ–शुक्र, बुध ये ७। ८। १० इन घरोंमें बैठे होवें तो वह नर व्यभिचारी (जार) होता है मंगल सातवें दशवें घरमें होवे अथवा ४ । १० इन घरोंमें होवे तो व्यभिचारी (जार) पुरुष होता है, जो यदि चंद्रमासे दशवें शुक्र होय. शनिसे चौथे घरमें शुक्र हो तो जन्मनेवाला जन जार (परस्त्री गामी) हो. बुध, शुक्र, शनि ये सातवें दशमें घरमें स्थित हों और शुक्र, अपनी राशिपर स्थित हो तोभी तद्वत् अर्थात् पर स्त्रीगामी (जार) होता है ॥ १७ ॥

प्रालेयांशोस्सिताद्वा दिनमणितनयस्तत्पुरोभाग-
वर्ती मूर्तौ चेच्चन्द्रशुक्रौ यदि तरणिसुतं पश्यत-
श्चायशाः स्यात् ॥ शेफच्छेदो नराणामथ तपन-
सुते भूमिकेन्द्रेऽर्कयुक्ते दृष्टे काव्योडुपाभ्यां यदि
दिवसपतेश्चोपरागोऽत्र तद्वत् ॥ १८ ॥

अर्थ–चन्द्रमासे अथवा शुक्रसे अगली राशिपर (अगले भावमें) शनि स्थित हो और चंद्रमा, शुक्र ये दोनों लग्नमें स्थित होके शनिको देखते हों तो जन्मनेवाला नर अपयश-

वाला (कीर्तिरहित) होता है. जो यदि शनि लग्नमें स्थित हो और शुक्र चंद्रमाकरके दृष्ट होवे तथा सूर्यका ग्रहण होता हो तो जन्मनेवाला जन लिंगच्छेदयुक्त (सुजाक आदि रोग-वाला) होता है और तद्वत् कहिये पूर्वोक्तकी तरह अर्थात् अपयशवालाभी होता है ॥ १८ ॥

यातं वक्रग्रहर्क्षे जनुषि भृगुसुते मानवस्तोषदायी सीमन्तिन्या रतः स्यान्न खलु मदनगं भार्गवं लग्न-नाथः ॥ पश्येत्स्त्रीयालयस्थो यदि रहसि तदा कामिनातोषदाता न स्यादेवं हिमांशुर्दिनकरसुत-युक् भौमतः खेसुखे वा ॥ १९ ॥

अर्थ–जो यदि शुक्र क्रूरग्रहकी राशिपर स्थित होवे तो-जन्मनेवाला जन स्त्रीको संभोग (रमण) के हेतुसे सुखदायी नहीं होता है और लग्नमें बैठा हुआ लग्नका पति (पूर्णदृष्टि-करके) घरमें स्थित हुए शुक्रको देखता हो तो संभोगसमयमें स्त्रीको सुखदाई न हो ऐसा नहीं अर्थात् रमणसमयमें सुखदाई होता है. जो यदि शनिसे युक्त हुआ चंद्रमा मंगलसे चौथे अथवा दशवें घरमें बैठा होय तो ऐसेही उक्त प्रकारसे स्त्रीको सुख देनेवाला होता है ॥ १९ ॥

क्षोणीपुत्रेण युक्तः प्रथमसुरगुरुर्लग्नतः षष्टपोऽयं कामाधिक्यं नराणां जनयति नियतं पापदृष्टो विशेषात्॥ काव्ये स्त्रीयालयस्थे तदनु मिथुनगे

कामवान्मानवः स्यान्मूर्तौ सप्ताश्वसूनौ धनुषि च वृषभे चेत्पुमानल्पकामः ॥ २० ॥

अर्थ-मंगलसे युक्त हुआ शुक्र लग्नसे छठे घरका पति हो तो मनुष्योंके कामदेवकी प्रबलता करता है, जो यदि वह शुक्र पापग्रहसे देखा गया हो तो विशेषकरके निरंतर कामदेवकी प्रबलता करता है. जो यदि शुक्र अपनी राशिपर स्थित हो अथवा मिथुनराशिपर स्थित हो तो मनुष्य कामदेवसे युक्त होता है. जो यदि लग्नमें शनि हो धनराशिका अथवा मकरराशिका होवे तो मनुष्य स्वल्प काम देनेवाला होता है ॥ २० ॥

मन्दे नक्रेऽल्पभाषी त्वथ रिपुगृहपे वा सुधांशावदृश्ये चेदर्धे संस्थिते ऽङ्को भवति जनिमतां नेत्रयोः क्रूरयुक्ते ॥ पश्येत्क्षीणेन चन्द्रं यदि भृगुतनयः सूर्यजः पश्यतीन्दुं स्वर्क्षे चन्द्रे नभःस्थे यदि मदनगतैर्वीक्ष्यते पापखेटैः ॥ २१ ॥

अर्थ-मकरराशिका शनि होवे तो अल्प बोलनेवाला होता है. जो यदि छठे घरका पति अथवा चंद्रमा क्रूरग्रहसे युक्त होके (अदृश्यार्द्ध) सप्तमभावके भोग्यांशसे लेके ८ । ९ । १० । ११ । १२ । लग्नका भुक्तांश इतनी जगहमें कहीं हो तो जन्मनेवालेके नेत्रोंमें कोई चिह्न हो. यदि क्षीणचंद्रमाको शुक्र नहीं देखता हो तब शनि देखता हो अथवा कर्कराशिपर

चंद्रमा स्थित होवे तब दशवें अथवा ७ घरमें स्थित हुए १ ग्रहोंकरके वह चंद्रमा देखा जाता हो तो ॥ २१ ॥

स्यान्नूनं चाल्पनेत्रस्तदनु तनुगतं भूमिजं वा क्षपेशं पश्येद्वाचस्पतिश्चेदसुरकुलगुरुः काणदृङ् मानवः स्यात् ॥ विच्छायातिग्मभानोः क्षिति भुवि च पुरो भागगे दृङ्नराणां सौम्ये चिह्नं दृशि स्यादथ वपुषि लये भार्गवे क्रूरदृष्टे ॥ २२ ॥

अर्थ—वह नर छोटे नेत्रोंवाला होता है. जो यदि इस योगके पीछे लग्नमें स्थित हुए मंगलको अथवा चंद्रमाको बृहस्पति अथवा शुक्र देखता हो तो वह नर काणा होता है. जो यदि सूर्यसे अगली राशिपर प्राप्त हुआ मंगल हो तो मनुष्योंकी दृष्टि कांतिरहित होती है. और सूर्यसे अगली राशिपर बुध होवे तो नेत्रमें चिह्न होय. जो यदि लग्नमें आठवें घरमें शुक्र हो पापग्रहसे देखा जाता हो तो ॥ २२ ॥

नेत्रे पीडाश्रुपातात्तदनु शशिकुजावेकभावे यदाक्ष्णोश्चिह्नं किंचित्तदानीं ग्रहबलवशतो दृश्यमेवं सुधीभिः ॥ मार्तण्डे रिःफयाते तदनु नवमगे पुत्रगे वा खलाढ्ये दृष्टे वा स्यान्मनस्वी सुविकलनयनः सूर्यजे व्याधियुक्तः ॥ २३ ॥

अर्थ—उस पुरुषके आंसू गिरनेके हेतुसे नेत्रमें पीडा होती है. जो यदि चंद्रमा और मंगल एक नवांशकपर स्थित होवे नेत्रोंमें कुछ चिह्न होवे पंडितजनोंने योगकारक ग्रहोंके

बलके विचारसे यह सब हाल कहना. जो यदि क्रूरग्रहोंसे दृष्ट अथवा क्रूरग्रहोंकरके संयुक्त हुआ सूर्य १२ । ९ । ५ इन घरोंमें पडा हो तो वह नर बुरे (खराब) नेत्रोंवाला हो अथवा १२ । ९ । ५ इनही घरोंमें पापग्रहोंसे दृष्ट अथवा युक्त होके शनि पडा हो तो वह नर रोगी होवे ॥ २३ ॥

चन्द्रं पृष्ठोदयस्थं हिबुकगृहगतः सूर्यसूनुः प्रपश्येदित्थं लग्नाधिनाथे क्रियभवनगते मानवो वामनः स्यात् ॥ कोशे पीयूषभानुर्जलचरगृहगः सौरिणा संयुतो वा मार्तण्डे भूमिकेन्द्रे यदि भवति तदा दद्रुमान्पूरुषः स्यात् ॥ २४ ॥

अर्थ-पृष्ठोदय (१ । २ । ४ । ९ । १० इन राशियों) पर स्थित हुए चंद्रमाको चौथे घरमें बैठा हुआ शनि देखता हो और इसी योगसमयमें लग्नका स्वामी मेषराशिपर स्थित हो तो वह नर वामन हो. जलचर राशिपर स्थित हुआ चंद्रमा दूसरे घरमें स्थित हो अथवा शनिसे युक्त हो अथवा सूर्य लग्नमें हो तो वह नर दद्रु (दाद) रोगवाला होता है ॥ २४॥

दृष्टे क्रूरैर्न सौम्यैर्यदि रिपुगृहगे चोडुपे प्लीहवान् स्यादेवं कामाङ्गनाथे तदनु रविसुतस्तुर्यगो नष्टदृष्टिः ॥ प्लीही स्याल्लग्ननाथे दिनकरतनये क्रूरनिष्पीडिते चेत्सौख्यायुक्मानवः स्यात्तदनु सदनगेते प्लीहवान् रूपहीनः ॥ २५ ॥

अर्थ–जो यदि शत्रुघर (छठे घर) का पति हुआ चंद्रमा पापग्रहोंकरके दृष्ट हो और सौम्यग्रहोंकी दृष्टि नहीं होवे तो प्लीहा (तापतिल्ली) रोगवान् हो इसी प्रकार सातवें घरका पति अथवा लग्नका पति चंद्रमा केवल पाप ग्रहोंकरकेही देखा गया हो तोभी प्लीहारोगवाला हो और पापग्रहोंकरके दृष्ट हुआ शनि चौथे घरमें बैठा हो तो अंधा होवे और दृष्टि अथवा योगकरके क्रूरग्रहोंसे विकल हुआ शनि लग्नका पति होवे तो वह नर सुखरहित हो और शनि लग्नमें पडा हो तो वह नर प्लीहा (तापतिल्ली) रोगवान् और आनंदरहित हो ॥ २५ ॥

क्रूराः केन्द्रालयस्था वपुषि च विकलाः केन्द्रगौ पुष्पवन्तौ किंवा लग्ने प्रपश्येत्कविमिनतनयः श्रोणिभागेऽङ्गहीनः ॥ काव्यः पातालयायी सुरपतिगुरुणा कापि युक्तोऽर्कसूनुर्भौमो वा रौहिणेयो भवति हि विकलः श्रोणिभागे भुजेऽग्रो॥२६॥

अर्थ–जो यदि क्रूरग्रह केन्द्रमें स्थित हो तो जन्मनेवाला नर विकल शरीरवाला होता है.जो यदि सूर्य चंद्रमा (एकत्रही) केंद्रमें पडे हों तौभी विकल शरीरवाला हो अथवा लग्नमें स्थित हुए शुक्रको शनि देखता हो तो कटिभागपर अंगहीन हो. शुक्र चौथे घरमें बैठा हो और बृहस्पतिकरके युक्त हुआ शनि, मंगल अथवा बुध जहां कहीं (किसी घरमेंभी) स्थित हो तो

कटीकी जगह हाथ वा पैरकी जगह विकल (अंगहीन) होता है ॥ २६ ॥

आयुःपुण्याधिनाथौ यदि खलखचरात्तुर्यगौ पापयुक्तौ अङ्गावैकल्यवान् स्यात् कुजशनिसहिते सैंहिकेये च सूर्ये ॥ द्वेष्यस्थे तद्वदेवं शनिरिपुगृहपौ रिःफयातौ खलैश्चेद्दृष्टौ तद्वत्तदानीं रविविधुरविजा वैरिरन्ध्रालयस्थाः ॥ २७ ॥ स्यादार्तिः पञ्चशाखे तदनु दशमगे सूर्यसूनौ सिताढ्ये क्लीवः स्यात्सूर्यसूनौ व्ययरिपुगृहगे शुक्रतःक्लीवरूपः ॥ पश्येत्सूर्यालयस्थो मदनभवनगं भूमिसूनुं सुधांशुश्चार्कः काणश्च कर्के यदि शुभगृहपो मेषसिंहालिनक्रे ॥ २८ ॥

अर्थ—आठवें और नववें घरके पति पापग्रहोंसेही चौथे घरमें बैठे हों और पापग्रहोंसे युक्त होवे तो जांघ नहीं हो अर्थात् पांगला हो. जो यदि मंगल और शनिसे युक्त हुआ राहु छठे घरमें बैठा हो अथवा शनि मंगलसे युक्त हुआ सूर्य छठे घरमें बैठा हो तो तिसी प्रकार पांगला होता है, शनि और छठे घरका पति क्रूरग्रहोंसे देखे गये हों और १२ घरमें स्थित होवे तोभी पांगला होता है. जो यदि सूर्य, चंद्रमा, शनि ६ । ८ वें घरमें स्थित हों तो जन्मनेवालेके हाथमें पीडा होती है. जो यदि शुक्रसे युक्त हुआ शनि दशवें घरमें

बैठा हो तो नपुंसक होता है और शुक्र बैठे हो उस राशिसे १२ । ६ घरमें शनि स्थित होवे तो नपुंसकसरीखा रूपवाला होता है जो यदि सिंहराशिपर स्थित हुआ चंद्रमा सातवें घरमें बैठे हुए मंगलको देखता हो तो काणा होता है और कर्कराशिपर स्थित हुआ सूर्य सातवें घरमें स्थित हुए मंगलको देखता हो तोभी काणा होता है. जो यदि नववें घरका पति मेष, सिंह, वृश्चिक, मकर इन राशियोंपर स्थित हो तब यह योग पूर्ण जानना ॥ २७ ॥ २८ ॥

अन्योऽन्यं पश्यतश्चेत्तरणिहिमकरौ तत्तनूजौ मिथो वा भूसूनुः पश्यतीनं समभवनगतं त्वङ्गच-न्द्रौ यदौजे ॥ओजर्क्षे युग्मराशौ हिमकरशशिजौ भूसुतेनेक्षितौ चेत्पुंराशौ लग्नशुक्रौ तदनु हिम-करः क्लीबयोगाः षडेते ॥ २९ ॥

अर्थ–विषमराशि और समराशिपर स्थित हुए सूर्य,चंद्रमा आपसमें देखते हों अर्थात् विषमराशिका सूर्य समराशिके चंद्रमाको और यह चंद्रमा सूर्यको देखता हो यह एक योग और इनके पुत्र अर्थात् शनि, बुध येभी विषमराशिपर इसी प्रकारसे स्थित हुए आपसमें देखते हों यह दूसरा योग.समरा-शिके सूर्यको विषमराशिगत मंगल देखता हो, मंगलको सूर्य देखता हो यह तीसरा योग. विषमराशिके लग्न और चंद्रमा समराशिगत मंगलकरके दृष्ट यह चौथा योग. चंद्रमा, बुध ये

क्रमकरके विषम सम राशिपर हों और मंगलकरके देखे जाते हों यह पांचवां योग और लग्न, शुक्र, चंद्रमा, ये पुरुषग्रहकी राशिपर तथा नवांशकमें स्थित हों यह छठा योग. ऐसे छः योग नपुंसक करनेवाले हैं ॥ २९ ॥

आयुःस्थानोपयाते धरणिसुतयुते भार्गवे वातकोपात्काण्ये भौमेन युक्ते कुजभवनगते भूमिजा मुष्कवृद्धिः ॥ भौमर्क्षे काव्यचन्द्रौ सुरपतिगुरुणा सूर्यजेनाथ दृष्टौ नूनं स्यान्मानवानां जनुषि कलजा मुष्कवृद्धिर्नितान्तम् ॥ ३० ॥

अर्थ—मंगलसे युक्त हुआ शुक्र आठवें घरमें हो तो वातकोपसे वृषणवृद्धि (वृषण बढ जावे) हो. मंगलसे युक्त हुआ शुक्र मंगलकी राशिपर स्थित होवे तो पृथ्वीके संसर्गसे वातकोपसे वृषण बढ जाते हैं. जिन मनुष्योंके जन्मसमयमें मंगलकी राशिपर स्थित हुए शुक्र, चंद्रमा, बृहस्पति शनिसे देखे गये हों तो तिनके शुक्रशोणित (रक्तकालिल) से अत्यंत वृषण बढते हैं ॥ ३० ॥

कीटेऽस्ते विलग्ने सुविकृतरदनश्चापगो मेषसंज्ञे खल्वाटः पापलग्ने धनुषि गवि तथालोकिते क्रूरखेटैः॥ धर्मार्थान्त्यात्मजस्था यदि खलखचरा बन्धभाक् पूरुषः स्यादेवं लग्ने क्रिये वा धनुषि गवि तथा राश्मिजं बन्धनं तुः ॥ ३१ ॥

अर्थ–धन, वृष, मेष इन राशियोंका लग्न पापग्रहों करके देखा गया हो तो दांतोंमें रोग होता है. पापग्रहोंसे युक्त हुआ लग्न धन तथा वृषराशिका हो पूर्वोक्त प्रकारसे पापग्रहोंकरके देखाभी जाता हो तो जन्मनेवाला जन गंजा होता है और ९।२।१२।५ इन घरोंमें पापग्रह होवें तो बंध (कैद आदि) में बंधनेवाला हो इसी प्रकार मेष, धन, वृष ये लग्न क्रूरग्रहोंसे युक्त हों तो मनुष्यके रस्सी आदिसे बंधन होता है ॥ ३१ ॥

दुर्गन्धिर्दानवेज्ये शनिभवनगते मानवो विग्रहे स्याद्वेष्याधीशे बुधर्क्षे तदनु मकरगे तद्वदत्राथ काव्ये ॥ केन्द्रस्थे तेन युक्तस्यादथ कविरविजौ स्वीयहद्दायुतौ चेत्तद्वच्चंद्रेऽजयाते तनुसदनगते चानने स्याद्विगन्धः ॥ ३२ ॥

अर्थ–शनिकी राशिपर शुक्र हो तो जन्मनेवाले मनुष्यके शरीरपर दुर्गंधि होती है. छठे घरका पति ३ । ६ । १० इन राशियोंपर हो तोभी शरीरमें दुर्गंधिवाला हो. जो यदि बुधकी राशिपर स्थित हुआ शुक्र बुधसे युक्त होके केंद्रस्थानमें पडा हो तो शरीरमें दुर्गंधि होती है और शुक्र, शनि अपने त्रिंशांशमें प्राप्त होवें तोभी शरीरमें दुर्गंधिवाला होता है और मेषराशिका चंद्रमा लग्नमें पडा हो तो मुखमें दुर्गंध होती है ॥ ३२ ॥

एवं ग्रहाणां सदसत्फलानां योगाद्ग्रहज्ञैरनुयोजनीयम् ॥ शुभाशुभं जन्मनि मानवानां फलं सुमत्या प्रविचार्य नूनम् ॥ ३३ ॥

21361

अर्थ-ग्रहोंको जाननेवाले पंडितोंने शुभाशुभफलदायी ग्रहोंके योगसे इस प्रकारसे योजना करनी, मनुष्योंके जन्म-समयमें शुभाशुभ फल अपनी बुद्धिसे विचारके निश्चयसे कहना चाहिये ॥ ३३ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोषेऽलंकाराख्ये जातके मञ्जुलेऽस्मिन् ॥ योगाध्यायः श्रीगणेशेन वर्यैर्वृत्तैर्युक्तो रामरामैः प्रणीतः ॥ ३४ ॥

इति जातकालंकारे योगाध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥

अर्थ-मनोहर छंदकरके रचे हुए पंडितोंको प्रसन्न करनेवाले, मनोहर इस जातकालंकारविषे श्रीगणेशकविने उत्तम तेंतीस श्लोकोंकरके यह योगाध्याय समाप्त किया ॥ ३४ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां
योगाध्यायस्तृतीयः ॥

अथ विषकन्याध्यायः ४ ।

भौमाङ्के कृत्तिकायां शतभिषजि तथा सूर्यमन्दारवारे भद्रासंज्ञे तिथौ या किल जननमियात्सा कुमारी विषाख्या ॥ लग्नस्थौ सौम्यखेटावशुभगगनगश्चैक आस्ते ततो द्वौ वैरिक्षेत्रानुयातौ यदि जनुषि तदा सा कुमारी विषाख्या ॥ १ ॥

21361

अर्थ--आश्लेषा, कृत्तिका, शतभिषा इन नक्षत्रोंमें सूर्य, शनि, मंगलवार और भद्रासंज्ञक तिथियोंमें कन्या जन्मे तो वह विषकन्या होती है अर्थात् रविवार द्वितीया १ योग, आश्लेषा, कृत्तिका, शनिवार सप्तमी २ योग, शतभिषा मंगलवार द्वादशी यह तीसरा योग है. इनमें जन्मनेवाली विषकन्या होवे और दो शुभग्रह लग्नमें स्थित हों एक पाप ग्रह दशवें घरमें स्थित हो दो पापग्रह छठे घरमें हों तब जन्मनेवाली वह लडकी विषकन्या कहलाती है ॥ १ ॥

मन्दाश्लेषाद्वितीया यदि तदनु कुजे सप्तमी वारुणर्क्षे द्वादश्यां च द्विदैवे दिनमणिदिवसे यज्जनिः सा विषाख्या ॥ धर्मस्थो भूमिसूनुस्तनुसदनगतः सूर्यसूनुस्तदानीं मार्तण्डः सूनुयातो यदि जनिसमये सा कुमारी विषाख्या ॥ २ ॥

अर्थ--शनिवारको आश्लेषा नक्षत्र द्वितीया तिथि हो, मंगलको सप्तमी शतभिषा नक्षत्र द्वादशी तिथि हो इन तीन योगोंमें जिसका जन्म हो वह विषकन्या कहलाती है. नववें घरमें मंगल हो, शनि लग्नमें हो, सूर्य पांचवें घरमें हो तब जन्मनेवाली विषकन्या होती है ॥ २ ॥

लग्नादिन्दोः शुभो वा यदि मदनपतिर्द्यूनयायी विषाख्या दोषं चैवानपत्यं तदनु च नियतं हन्ति वैधव्यदोषम् ॥ इत्थं ज्ञेयं ग्रहज्ञैः सुमतिभिरखिलं

योगजातं, ग्रहाणामार्थैरार्यानुमत्या मतमिह गदितं जातके जातकानाम् ॥ ३ ॥

अर्थ—जो यदि सातवें घरका पति अथवा शुभग्रह लग्नसे वा चंद्रमासे सातवें घरमें बैठा हो तो विषकन्याका दोष जिससे होनेवाला संतानहीन फल और वैधव्यदोष दूर होता है ऐसे इस उक्त प्रकारसे इस जातकालंकारमें दैवज्ञ सभ्यजनोंके अनुमत करके जातकोंके संपूर्ण योग कहे हैं सो उत्तम बुद्धि- वाले दैवज्ञजनोंने इसी प्रकारसे जानने अर्थात् ये संपूर्ण योग इसी प्रकारसे बताने चाहिये ॥ ३ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोषेऽलंकाराख्ये जातके मञ्जुलेऽस्मिन् ॥ कन्याध्यायः श्रीगणेशेन वर्यै- र्वृत्तैर्युक्तो वह्निसंख्यैर्विषाख्यः ॥ ४ ॥

इति श्रीजातकालंकारे विषकन्याध्यायश्चतुर्थः ॥४॥

अर्थ—मनोहर छंदोंकरके रचे हुए पंडितजनोंको संतुष्ट करनेवाले मनोहर इस जातकालंकारविषे उत्तम तीन श्लोकों- करके श्रीगणेशकविने विषकन्या अध्याय कहाहै ॥ ४ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां विषकन्या- ध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

अथायुर्दायाध्यायः ५ ।

आयुर्मूलं जन्मिनां जीवनं च ह्यामीवानां निर्जराणां सुधेव ॥ एवं प्राहुः पूर्वमाचार्यवर्यास्तस्मादायुर्दायमेनं प्रवक्ष्ये ॥ १ ॥

अर्थ--जन्मनेवालोंके जीवनेका मूल आयु है जैसे देवताओंको अमृत है वैसे आयु है इस प्रकारसे पहलेके आचार्योंने कहा है इसीवास्ते इस आयुर्दाय अध्यायको कहूंगा ॥ १ ॥

लग्नाधीशातिवीर्यो यदि शुभविहगैरीक्षितः केन्द्रयातैर्दद्यादायुः सुदीर्घं गुणगणसहितं श्रीयुतं मानवानाम् ॥ सौम्याःकेन्द्रास्यरन्ध्रा जनुषि च रहितैर्नैनायके स्त्रीयनुक्ते पीयाह्नि लग्ननाथे वपुषि च शरदां पष्टिरायुर्नराणाम् ॥ २ ॥

स्वीयतुङ्गे सुरेज्ये लग्नाधीशेऽतिवीर्ये गगनवसुस-
मातुल्यमायुर्नराणाम् ॥ ३ ॥

अर्थ-सौम्य ग्रह केंद्र (१ । ४ । ७ । १०) में स्थित हों और बृहस्पति लग्नमेंही हो और ये सब दशवें घरमें स्थित हुए क्रूरग्रहोंकरके दृष्ट नहीं हो तो सत्तर वर्षकी आयु हो और शुभग्रह लग्नमें तथा नववें पांचवें घरमें स्थित होवें तथा बृहस्पति उच्चका हो और लग्नपति अति बलिष्ठ होवे तो मनुष्योंकी अस्सी वर्षकी अवस्था होवे ॥ ३ ॥

सौम्ये केन्द्रेऽतिदीप्ते यदि निधनपदं खेटहीनं वीर्ये
समाः स्युस्त्रिंशत्सौम्येक्षितं चेद्गगनहिमकरैः संयु-
ताथो स्वभे चेत् ॥ स्वत्र्यंशे चामरेज्ये मुनिनय-
नमितं स्वर्क्षगो लग्नगो वा चन्द्रे द्यूने शुभश्चेद्गग-
नरसमितं कोणगाः सौम्यखेटाः ॥ ४ ॥

अर्थ-बुध केन्द्रस्थानमें पडा हो, अत्यंत बलिष्ठ हो और आठवे घरमें कोई ग्रह न हो तो तीस वर्षकी आयु होती है. जो यदि वह आठवां घर शुभग्रहोंकरके देखा जाता हो तो चालीस वर्षकी अवस्था हो और बृहस्पति अपनी राशिपर अपने द्रेष्काणपर हो तो सत्ताईस वर्षकी अवस्था हो. चंद्रमा अपनी राशिका हो अथवा लग्नमें पडा हो और नानवें घरमें शुभ ग्रह बैठा हो तो साठ वर्षकी अवस्था होवे ॥ ४ ॥

कीटे लग्ने सुरेज्ये यदि भवति तदा स्वायतुल्यं
लग्नेशो धर्मेऽङ्के चाङ्गनाथे निधनभवनगे क्रूरदृष्टेऽ

ङ्घिहस्ताः ॥ लग्नाधीशाष्टनाथौ लयभवनगतौ सप्तविंशद्विलग्ने क्रूरेज्यौ चन्द्रदृष्टौ यदि निधनगतः कश्चनास्ते द्विपक्षाः ॥ ५॥

अर्थ-जो यदि शुभ ग्रह ९ । ५ घरमें हो और कर्क लग्नपर बृहस्पति होवे तो अस्सी वर्षकी अवस्था होती है. आठवें घरका पति नवयें घरमें हो और लग्नपति क्रूरग्रहसे दृष्ट होके आठवें घरमें बैठा हो तो चौवीस वर्षकी अवस्था होवे और लग्नका पति तथा अष्टम घरका पति आठवें घरमें होवे तो सत्ताईस वर्षकी अवस्था हो. जो यदि पापग्रहसे युक्त हुआ बृहस्पति लग्नमें स्थित हो और चंद्रमाकरके दृष्ट हो, आठवें घरमें अन्य कोई ग्रह बैठा होवे तो बाईस वर्षकी अवस्था होती है ॥ ५ ॥

लग्नेन्दू क्रूरहीनौ वपुषि सुरगुरौ रन्ध्रभं खेटहीनं केन्द्रे सौम्ये सशैलाः सितविबुधगुरुस्याच्छतं केन्द्रगौ चेत्॥ वागीशे कर्कलग्ने शतमिह भृगुजे केन्द्रगेऽप्यार्कसूनौ धर्मागस्थे सुधांशौ व्ययनवम-गते हायनानां शतं स्यात् ॥ ६ ॥

अर्थ-लग्न और चन्द्र क्रूरग्रहोंसे रहित और लग्नमें बृहस्पति होवे, आठवें घरमें कोई ग्रह नहीं हो, केंद्रमें शुभ ग्रह होवे तो सत्तर वर्षकी अवस्था हो. जो यदि शुक्र, बृहस्पति केंद्रमें पडे हो तो सौ वर्षकी अवस्था हो. जो यदि बृहस्पति

का हो और शुक्र केंद्रमें पडा हो तो सौ वर्षकी अवस्था
। है और शनि नवें घरमें हो अथवा लग्नमें हो, चंद्रमा
हो अथवा नवें घरमें हो तो सौ वर्षकी आयु होवे ये सब
। यश संपत्तिकेभी सूचक जानने ॥ ६ ॥

धीकेन्द्रायुर्नवस्था यदि खलखचरा नो गुरोर्मे
विलग्ने केन्द्रे काव्ये गुरौ वा शुभमपि निधनं
सौम्यदृष्टं शतं स्यात् ॥ लग्नादिन्दोर्न खेटा यदि
निधनगता वीर्यभाजौ सितेज्यौ पूर्णायुः स्वीय-
राशौ शुभगगनचराः षष्टिरङ्गोच्चगेऽब्जे ॥ ७ ॥

अर्थ-क्रूर ग्रह ५ । १ । ४ । ७ । १० । ८ । ९ इन
घरोंमें नहीं होवे और धन मीन राशिपर तथा लग्नमें या केंद्रमें
शुक्र अथवा बृहस्पति होवे और नववां आठवां घर शुभग्रहसे
देखा जाता हो तो सौ वर्षकी अवस्था होती है. जो यदि
लग्नसे अथवा चंद्रमासे आठवें घरमें कोई ग्रह नहीं होवे और
शुक्र, बृहस्पति बलवंत होवें तो पूर्ण आयु (१२० वर्षकी)
होवे. जो यदि शुभ ग्रह अपनी राशिपर होवे और लग्नमें तथा
वृषका चंद्रमा होवे तो साठ वर्षकी अवस्था होती है ॥ ७ ॥

कोदण्डान्त्यार्धमङ्गं यदि सकलखगाः स्वोच्चगा
ज्ञे जिनांशेगोंऽस्ये पूर्णं च केन्द्रे सुरपतिभृगुजौ
लाभगेऽब्जे परायुः ॥ शुक्रे मीने तनुस्थे निधन-
गृहगते सौम्यदृष्टे सुधांशौ जीवे केन्द्रे शतं स्या-

द्वथ तनुग्रहपे छिद्रगे पुष्करेऽब्जे ॥ ८ ॥ वागीशे वीर्ययुक्ते नवमभवनगाः सर्वखेटाःशतायुः कर्केऽङ्गे जीवचन्द्रौ सहजरिपुभवे सत्कविज्ञौ च केन्द्रे ॥ केन्द्रे सूर्यारमन्दा गुरुनवलवगा वाक्पतौ लग्नयाते व्ययस्थानेषु शेषाः शरगजतुलितं स्यान्नराणां तदायुः ॥ ९ ॥

अर्थ—धनु राशिका पिछला अर्द्धभाग लग्न हो तहां सब उच्चके होवें और बुध चौबीस अंशोंसे वृषका होवे तब पूर्ण आयु (१२० वर्षकी) होती है. जो यदि शुक्र बृहस्पति केंद्रमें स्थित हों और चन्द्रमा ग्यारहवें घरमें होवे तो परम आयु होती है. मीन राशिका शुक्र लग्नमें हो और सौम्य ग्रहों-करके देखा हुआ चंद्रमा आठवें घरमें हो, बृहस्पति केंद्रमें हो तो सौ वर्षकी आयु होती है और लग्नका पति आठवें घरमें हो, चन्द्रमा दशवें घरमें हो, बृहस्पति बलवान् हो, अन्य सब ग्रह नववें घरमें होंवे तो सौ वर्षकी अवस्था होती है. कर्क लग्न हो, बृहस्पति और चन्द्रमा ३ । ६ । ११ इन घरोंमें हों और शुभग्रहोंसे युक्त हुए शुक्र, बुध केंद्रस्थानमें होंवें तोभी सौ वर्षकी आयु होती है. सूर्य, मंगल, शनि ये बृहस्पतिके नवांशकमें स्थित होके केंद्रमें बैठे होवें और बृहस्पति लग्नमें स्थित होवे. अन्य सब ग्रह अष्टम स्थानमें नहीं होवे तो मनुष्योंकी अवस्था पचासी वर्षकी होती है ॥ ८ ॥ ९ ॥

क्रूराः सौम्यांशयाता उपचयगृहगाः कातराः कण्टकस्थाःसौम्या व्योमार्कसंख्या यदि तनुपकुजौ रन्ध्रगौ नो परायुः ॥ केन्द्रे लग्नेशजीवौ नवसुतनिधने कण्टके नो खलाख्याः संपूर्ण पापखेटा यदि गुरुजलगा जीवभागे च सौम्याः ॥ १० ॥ युग्मर्क्षांशे गता वा व्ययधनगृहगाश्चेच्छुभाः शीतभानुः संपूर्णो लग्नयायी शतमिह जनिनामिन्दिरामन्दिरं स्यात् ॥ लग्नेशे सौम्ययुक्ते वपुषि च लग्नपे रन्ध्रगे नान्यदृष्टे विंशत्केन्द्रे लग्नेशे बलवियुजि तथा लग्नपे त्रिंशदायुः ॥ ११ ॥

अर्थ–पापग्रह शुभग्रहोंके नवांशकमें स्थित होके ३ । ६ । १० । ११ इन घरोंमें पडे हों तो डरपोक (युद्धमें भागने वाले) नर होते हैं, जो यदि शुभग्रह केंद्रस्थानमें पडे हों तो एक सौ वीस वर्षकी परम आयु होती है परन्तु इस परम आयुयोगमें शनि, मंगल आठवें घरमें होवे तो परम आयु नहीं होती है. लग्नपति और बृहस्पति केंद्रमें हों और ९ ।५। ८ इन घरोंमें तथा केंद्रमें पापग्रह नहीं होवे तो पूर्ण आयु होती है, जो यदि पापग्रह नववें चौथे घरमें हो और शुभग्रह बृहस्पतिके नवांशकमें हो अथवा समराशिके नवांशकमें स्थित होवे और शुभ ग्रह १२ । २ घरमें हो पूर्ण चंद्रमा लग्नमें स्थित हो तो संपत्ति लक्ष्मीसहित हुआ जन सौ वर्षतक जीवता

है. जो यदि शुभग्रहोंसे युक्तहुआ लग्नपति लग्नमें बैठा हो, अन्यग्रहों करके देखा नहीं जाता हो और अष्टम घरका पति आठमेंही पडा हो तो वीस वर्षकी अवस्थावाला होता है और बलहीन हुए लग्नपति तथा अष्टम घरके पति केंद्रमें पडे हों तो वीस वर्षकी अवस्था होती है ॥ १० ॥ ११ ॥

इन्दावापोक्लिमस्थे तदनु तनुपतौ निर्बले पापदृ-
ष्टे दन्तैस्तुल्यं ततोऽर्कः खलखगविवरे लग्नगोऽ-
ब्जत्रिसंख्यम् ॥ रिःफे केन्द्रे सुरज्ये गुरुरिपुसहजे स्यात्सपापेऽङ्गनाथे रामाब्दं कर्कलग्ने कुज-
तुहिनकरौ केन्द्ररन्ध्रे ग्रहोनम् ॥ १२ ॥

अर्थ--चंद्रमा आपोक्लिम (३ । ६ । ९।१२) इन घरोंमें बैठा हो और लग्नपतिभी ३ । ६ । ९ १२ इनही घरोंमें हो, ये दोनों निर्बल हों तथा पापग्रहोंकरके दृष्ट होवे तो बत्तीस वर्षकी आयु हो. जो यदि क्रूरग्रहोंके मध्यमें आया हुआ सूर्य लग्नमें बैठा होवे तो इकतीस वर्षकी आयु होती है बृहस्पति केंद्रमेंही अथवा बारहवें घरमें हो और लग्नका पति पापग्रहसे युक्त होके ९ । ६ । ३ इन घरोंमें बैठा होवे तो तीन वर्षकी अवस्था होती हैं. कर्कलग्न हो चन्द्रमा मंगल केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) स्थानमें हो और ८ घरमें कोई ग्रह नहीं हो तोभी ॥ १२ ॥

रामाब्दं स्याल्लयेशे वपुषि च निधनं सौम्यहीनं
स्वेदा लग्नेशो रन्ध्रयातो वपुषि निधनपः स्या-

नृणां वाणसंख्यम् ॥ नक्रे तिग्मांशुमन्दौ सहज
रिपुगतौ कण्टके रन्ध्रनाथे पारावाराब्धिसंख्यं
तदनु शुभखगाः सद्धर्क्षेऽत्र खाग्निः ॥ १३ ॥

अर्थ—तीनही वर्षतक जीवता है. आठवें घरका पति लग्नमें हो. आठवें घरमें शुभग्रह नहीं पडा हो तो चालीस वर्षकी अवस्था हो लग्नका पति आठवें घरमें हो और आठवें घरका पति लग्नमें हो तो मनुष्योंकी पांचही वर्षकी आयु होती है. मकरराशिपर स्थित हुए शनि सूर्य तीसरे वा छठे घरमें होवें और अष्टम घरका पति केंद्रमें हो तो चालीस वर्षकी अवस्था होती है. जो यदि शुभग्रह शुभग्रहोंके नवांशकमें अथवा शुभग्रहोंकी राशिपर स्थित होवें तो तीस वर्षकी आयु होती है ॥ १३ ॥

क्रूरैर्दृष्टेऽङ्गनाथे यदि शुभविहगा वीर्यवन्तः सु-
धांशौ संस्थे सौम्ये गणे चेद्गुणमुनितुलितं रन्ध्र-
गैर्मध्यमायुः ॥ स्याच्चन्द्रादह्नि पापैरथ तपनसुते
व्यङ्गलग्ने हि याते रिःफेशे रन्ध्रनाथे यदि बलर-
हिते कङ्कपत्राक्षिसंख्यम् ॥ १४ ॥

अर्थ—जो यदि लग्नका पति पापग्रहोंकरके दृष्ट हो और शुभग्रह बलवंत होवे और चंद्रमा शुभग्रहके नवांशमें स्थित होके किसी घरमें बैठा हो तो तिहत्तर वर्षकी अवस्था होती है और चंद्रमासे आठवें घरमें पापग्रह हो, दिनमें जन्म भया हो तो मध्यम आयु होती है इससे अनंतर शनि द्विस्वभाव-

संज्ञक लग्नमें पडा हो और बारहवें घरका पति तथा अष्टमं घरका पति बलहीन होवे तो पचीस वर्षकी अवस्था होती है ॥ १४ ॥

कर्केऽङ्के सप्तसप्तौ खलविहगयुते पुष्करस्थे द्विजेशे केन्द्रे याते सुरेज्ये शरविशिखमितं पुष्करे नीरगे वा ॥ सौम्ये पीयुषभानौ व्ययनिधनगते देहगे वा कवीज्यावेकर्क्षे व्योमबाणैर्व्ययरिपुनिधने लग्ननाथाढ्यचन्द्रे ॥ १५ ॥

अर्थ—कर्कलग्नमें सूर्य हो और पापग्रहसे युक्त हुआ चंद्रमा दशवें घरमें स्थित होवे और बृहस्पति केंद्रमें होवे तो पचपन वर्षकी अवस्था होती है. बुध दशवें घरमें हो वा चौथे घरमें होवे और चंद्रमा बारहवें आठवें घरमें वा लग्नमें होवे और शुक्र,बृहस्पति एकराशिपर कहीं स्थित होवें तो पचास वर्षकी आयु होती है और लग्नपतिसे युक्त हुआ चंद्रमा १२ । ६ । ८ इन घरोंमें पडा हो ॥ १५ ॥

शन्यंशे लग्ननाथे भुजगशरमितं स्यादथो सौम्यखेटा रन्ध्रोना देहनाथो व्ययरिपुनिधने पापयुक् षष्टिरायुः ॥ राशीशो लग्ननाथो दिनमणिसहितो मृत्युगो वाक्पतिश्चेन्नो केन्द्रे षष्टिरायुर्वपुषि दिनपतिः शत्रुभोमान्वितश्चेत् ॥ १६ ॥

अर्थ–और लग्नेश शनिके नवांशकमें स्थित होवे तो अठावन वर्षकी आयु होती है. जो यदि शुभग्रह अष्टमभावके विना अन्य कहीं स्थित होवे और लग्नका पति पापग्रहसे युक होके १२ । ६ । ८ इन घरोंमें बैठा हो तो साठ वर्षकी अवस्था होती है. चंद्रमाकी राशिका पति सूर्यसहित होके ८ घरमें पडे और लग्नेशभी आठवें हो और बृहस्पति केंद्रमें नहीं होवे तो साठ वर्षकी अवस्था होती है. अपने शत्रु और मंगलसे युक्त हुआ सूर्य लग्नमें हो ॥ १६ ॥

वागीशे हीनवीर्ये व्ययतनुजगते यामिनीशे ख-
शैला धर्मे सर्वैः परायुः खलखगलवगैः केन्द्रया-
तैरशीतिः ॥ क्रूरैः क्रूरक्षयातैः शुभभवनगतैः
सौम्यखेटैः सवीर्यैर्लग्नेशे स्यात्परायुः सुतभवन-
गतैः षष्टिरायुर्नराणाम् ॥ १७ ॥

अर्थ–बृहस्पति बलहीन हो और चंद्रमा १२ । ५ घरमें बैठा हो तो सत्तर वर्षकी अवस्था होती है और सब सौम्य ग्रह नववें स्थानमें पडे हो तो परम आयु होवे और पापग्रहोंके नवांशकमें प्राप्त होके केंद्रमें पडे हों तो अस्सी वर्षकी अवस्था होती है. पापग्रहोंकी राशिपर स्थित हो और शुभग्रह सौम्य ग्रहोंकी राशियोंपर स्थित होवें और लग्नका पति बलवान् होवे तो परम आयु होती है. जो सब सौम्य पाप ग्रह पांचवें घरमें स्थित होवें तो मनुष्योंकी साठ वर्षकी अवस्था होती है ॥ १७ ॥

सारंगस्यान्त्यभागे यदि वपुषि गते चाद्यभागे च केन्द्रे सौम्यैः खेटैः शतं स्याद्वसुसहजसुखे स्याच्चिरायुः समस्तैः ॥ लग्नात्प्रालेयभानोर्निधनसदनपे रिःफकेन्द्रेऽष्टविंशत्केन्द्रे सौम्यग्रहोने यदि मृतिभवने कश्चिदास्ते खरामाः ॥ १८ ॥

अर्थ—धनुराशिके पिछले भागका नवांशक लग्नमें प्राप्त हो और शुभग्रह प्रथम भागके नवांशमें स्थित होके केंद्रमें बैठे हों तो सौ वर्षकी अवस्था होती है और तीसरे, चौथे, आठवें घरमें सब ग्रह स्थित होवें तो मनुष्यकी दीर्घ आयु होती है. लग्नसे अथवा चंद्रमासे बारहवें घरमें अथवा केंद्रमें अष्ट घरका पति हो तो अट्ठाईस वर्षकी अवस्था होती है. केंद्रस्थानमें शुभ ग्रह नहीं हो और आठवें घरमें कोई शुभ ग्रह बैठे हों तो तीस वर्षकी अवस्था होती है ॥ १८ ॥

क्षीणे प्रालेयभानौ यदि खलखचरो मृत्युगो मृत्युनाथः केन्द्रस्थो लग्ननाथो निजबलरहितः स्वाश्वितुल्यं तदायुः ॥ सौम्यैरापोक्लिमस्थैर्दिनमणिजविधू वैरिरन्ध्रालयस्थौ तुल्यं फणाङ्कुशोः स्यादथ धनमृतिगौ रिःफगौ पापखेटौ ॥ १९ ॥ हीनो स्वर्भानुना वा यदि हिममहसा व्योमनेत्रम् मार्गे केन्द्रस्थो सूर्यनन्दो यदि वपुषि कुजः पुष्प बाणाङ्कशो स्यात् ॥ शुक्रेज्यानङ्ग्याती तनय-

भवनगौ सांकल्ये सलशुभसहितश्चेक्षितः स्याद्नायुः ॥ २० ॥

अर्थ–चंद्रमा क्षीण हो और क्रूर ग्रह आठवें घरमें बैठा हो और अष्टम घरका पति केंद्रमें स्थित हो, लग्नका पति निर्बल हो तो बीस वर्षकी अवस्था होती है. शुभ ग्रह आपोक्लिम (३ । ६ । ९ । १२ इन घरों) में स्थित होवें, शनि और चंद्रमा ६ ।८ घरमें स्थित हों तो बीस वर्षकी अवस्था होती है इससे अनन्तर दूसरे और आठवें घरमें तथा बारहवें घरमें रहित क्रूरग्रह बैठे होंवें तो बीस वर्षकी आयु होती है. जो यदि सूर्य, शनि केंद्रमें स्थित हों और मंगल लग्नमें होवे तो २० वर्षकी अवस्था होती है. शुक्र, बृहस्पति लग्नमें हों मंगल और पापग्रह (शनि) दोनों पांचवें घरमें होवें तो कुछभी आयु नहीं होती है अर्थात् स्वल्प आयु हो और जन्म राशिका स्वामी सूर्यसहित हुए लग्नमें बैठा हो और अन्य पापग्रह तथा शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट होवे तो स्वल्प (बहुत कम) आयु होती है ॥ १९ ॥ २० ॥

यत्संप्रोक्तं योगजं पूर्वमायुर्होरापारावारपारंगमज्ञैः॥ तस्मादायुः सारभूतं यदेत्पुण्याचारश्लोकभाजां नराणाम् ॥ २१ ॥

अर्थ–जातकरूपी समुद्रको पार उल्लंघनको जाननेवाले पंडित जनोंने पहले जो योगोंसे प्राप्त हुई आयु कही है वही

पूर्वोक्त साररूप यह आयु सदाचार धर्ममें युक्त रहनेवाले जनोंकी इसी प्रकारसे होती है ॥ २१ ॥

बलाबलविवेकेन पुष्करालयशालिनाम् ॥ सुम-
नोभिरिदं देश्यमायुर्धर्मादिशालिनाम् ॥ २२ ॥

अर्थ–सूर्य आदि ग्रहोंके बलाबलका विचारपूर्वक यह आयुर्योग उत्तमचित्तवाले जनोंने धर्मात्माजनोंको बताना चाहिये अर्थात् पाप करनेवालोंके यह योग नहीं मिलता है ॥ २२ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोषेऽलंकाराख्ये जातके
मञ्जुलेऽस्मिन् ॥ आयुर्दायः श्रीगणेशेन वर्यैर्वृ-
त्तैर्युक्तो बाहुपक्षैः प्रणीतः ॥ २३ ॥ इति श्रीजा-
तकालंकारे पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अर्थ–मनोहर छन्दोंकरके रचे हुए, पंडितजनोंको प्रसन्न करनेवाले मनोहर इस जातकालंकार नामक ग्रंथमें श्रीगणेशकविने उत्तम बाईस श्लोकोंकरके आयुर्दाय अध्याय रचा है ॥ २३ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां
पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ भावाध्यायः ६ ।

लग्नाधीशेऽर्थगे चेद्धनभवनपतौ लग्नयातेऽर्थवान्-
स्याद्बुद्ध्याचारप्रवीणः परमसुकृतकृत् सारभृ-
द्भोगशीलः ॥ भ्रातृस्थानेऽङ्गनाथे सहजभवनपे
लग्नयातेऽल्पशक्तिः सद्बन्धू राजपूज्यः कुलजनसु-
खदो मातृपक्षेण युक्तः ॥ १ ॥

अर्थ—लग्नका पति धनस्थानमें बैठा हो और धनस्थानका पति लग्नमें हो तो वह नर धनवान् होताहै, बुद्धिके आचरणमें निपुण, उत्तम सुकृत करनेवाला, बलवान् और भोगशील (पदार्थ भोगनेवाला) होता है. लग्नका पति तीसरे घरमें हो और तीसरे घरका पति लग्नमें पडा हो तो अल्पबलवाला हो और श्रेष्ठ बंधुजनोंसे युक्त हो, कुलके जनोंको सुख देनेवाला और मातृपक्ष (मामा नाना आदिकों) से संयुक्त होता है ॥ १ ॥

तुर्येशे लग्नयाते तदनु तनुपतौ तुर्यगे स्यात्क्षमा-
वान् ताताज्ञाराजकार्यप्रगुणमतियुतः सद्गुरुः
स्वीयपक्षः ॥ लग्नस्थे सूनुनाथेतनुजपदगते लग्न-
नाथे मनस्वी विद्यालंकारयुक्तो निजकुलविदितो
ज्ञानवान् मानसक्तः ॥ २ ॥

अर्थ—चौथे घरका पति लग्नमें पडे और लग्नका पति चौथे घरमें पडे तो क्षमा (शांति) वाला होवे; पिताकी

आज्ञामें और राज्यकार्यमें सरल बुद्धिवाला रहे, श्रेष्ठ गुरुवाला अथवा श्रेष्ठ जनोंका गुरु होवे और अपने पक्षमें स्थित (कायम) रहे. पंचम घरका पति लग्नमें स्थित हो और लग्नका पति पंचम घरमें स्थित होवे तो उत्तम मनवाला, विद्यासे विभूषित, अपने कुलमें विख्यात, ज्ञानवान् अभिमान युक्त होता है ॥ २ ॥

षष्ठेशे लग्नयाते तदनु तनुपतौ षष्ठगे व्याधिहीनो नित्यं द्रोहादिसक्तो वपुषि सबलवान् द्रव्यवान्संग्रही स्यात् ॥ मूर्तीशे कामयाते मदनसदनपे मूर्तिगे तातसेवी लोलस्वान्तोऽङ्गनायां भवति हि मनुजः सेवकः शालकस्य ॥ ३ ॥

अर्थ—छठे घरका पति लग्नमें हो और लग्नका पति छठे घरमें बैठा होवे तो रोगी नहीं होताहै और हमेशह द्रोह (छल) आदि करनेमें आसक्त, शरीरमें बलवान् तथा संग्रह करनेवाला होता है. लग्नका पति सातवें घरमें बैठा हो और सातवें घरका पति लग्नमें पड़ा हो तो वह मनुष्य पिताकी सेवा करनेवाला स्त्रीविषें चंचलमनवाला और शालकके काम करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अङ्गेशे रन्ध्रयाते निधनगृहपतावङ्गगे द्यूतबुद्धिः शूरश्चौर्यादिसक्तो निधनपदमियाद्भूपतेर्वा स्तनौ वा ॥ देहाधीशे शुभस्थे शुभभवनपतौ देहसंस्थे

विदेशी धर्मासक्तो नितान्तं सुरगुरुभजने तत्परो राजमान्यः ॥ ४ ॥

अर्थ--लग्नका पति आठवें घरमें होवे और आठवें घरका पति लग्नमें हो तो जुवा खेलनेमें बुद्धिवाला, शूर वीर, चोरी आदि करनेमें निपुण हो और राजासे अथवा लोगोंसे मृत्युको प्राप्त होवे, लग्नका पति नववें घरमें हो तो विदेशमें वास करे और निरन्तर धर्ममें आसक्त रहे, देवताके पूजनमें, गुरुकी सेवामें तत्पर रहे तथा राजासे मान्य होता है ॥ ४ ॥

कर्मस्थे लग्ननाथे गगनभवनपे लग्नगे भूपतिः स्यात् ख्यातो लाभे च रूपे गुरुभजनरतो लोलुपो द्रव्यनाथः॥लाभेशे लग्नयाते तनुभवनपतौ लाभसंस्थे सुकर्मा दीर्घायुःक्षोणिनाथः शुभविभवयुतः कोविदो मानवः स्यात् ॥ ५ ॥

अर्थ--लग्नका पति दशवें घरमें हो और दशवें घरका पति लग्नमें हो तो राजा होता है, लाभ करनेमें और उत्तम रूपमें प्रसिद्ध (विख्यात) हो, गुरुकी सेवामें प्रीतिवाला, चंचलचित्तवाला और द्रव्यका अधिपति होता है. ग्यारहवें घरका पति लग्नमें हो, और लग्नका पति ग्यारहवें घरमें हो तो सुन्दर कर्मवाला तथा दीर्घ आयुवाला होता है, राजा हो अथवा वह मनुष्य घरमें होवे तो सुन्दरकर्मवालासुन्दर ऐश्वर्यसे युक्त हो धीरजवान् और पंडित होता है ॥ ५ ॥

लग्नेशे रिःफयाते व्ययसदनपतौ लग्नगे सर्वशत्रु-र्बुद्ध्या हीनो नितान्तं कृपणतरमतिर्द्रव्यनाशी विलोलः ॥ इत्थं तातादिकानामपि जनुपि तथा खेचराणां हि योगाद्वाच्यं होरागमज्ञैस्तदनु तनुप-युग् भार्गवे राजपूज्यः ॥ ६ ॥

अर्थ—लग्नका पति बारहवें घरमें हो और बारहवें घरका पति लग्नमें हो तो सब जनोंका शत्रु हो अथवा सब जन उसके शत्रु होते हैं, वह निरंतर बुद्धिहीन होता है, अत्यंत कृपणबुद्धि हो और द्रव्यका नाश करनेवाला तथा चंचल स्वभाववाला होता है. इसही प्रकारसे जन्मसमयमें ग्रहोंके योगसे पिता आदिकोंका शुभाशुभ फल जातकशास्त्रवेत्ता पंडितोंने बताना चाहिये, जैसे पिताका घर दशवां है उसको लग्न समझे, ११ को धन भवन समझे, फिर पूर्वोक्त सब, योगोंको विचारके पिताका सब हाल कहे. इसी प्रकार पुत्र आदि भवनसे पुत्र आदिकोंका हाल कहना और लग्नेशसे युक्त हुआ शुक्र ६ । ८ । १२ इन घरोंके विना अन्य किसी घरमें बैठा हो तो वह नर राजपूज्य होता है अर्थात् मनोवांछित फलोंकी प्राप्तिवाला होता है ॥ ६ ॥

एवं स्वमत्या सुफलप्रबोधं श्रीजातकालंकरणं मनोज्ञम् ॥ वृत्तैरनन्तेशमितैर्निबद्धं मया मुदे दैवविदामुदारम् ॥ ७ ॥

अर्थ–मैंने (गणेशकविने) ऐसे अपनी बुद्धि करके सुन्दर फलोंको कहनेवाला पदपदार्थोंकरके मनोहर यह जातकालंकार दैवज्ञ (ज्योतिषी जनों) के आदरके वास्ते एक सौ दश श्लोकोंकरके रचा है ॥ ७ ॥

पुष्करालयवशा गुणसारा जातकोक्तिरमलेव मराला ॥ संस्कृता विहरतां भवतां मे मानसेऽति सरले सुकवीनाम् ॥ ८ ॥

अर्थ–पुष्करालय अर्थात् ग्रहोंके अधीन अर्थात् शुभाशुभसूचक ग्रहोंकरके उपयुक्त हुई गुणोंकी साररूपा संस्कृता अर्थात् मनोहर वाणीसे शुद्ध की हुई ऐसी मेरी यह जातकोक्ति (जातकफलकथनरूपा वाणी) सुन्दर कवियोंके तुम्हारे अत्यंत सरल मानसहृदयमें क्रीडा करे कैसे कि जैसे पुष्कर (जलस्थानमें) रहनेवाली, गुणसारा और अमला (शुद्धा दोषरहिता), संस्कृता (स्वभावसे रुचिर) ऐसी हंसी मानससरोवरमें क्रीडा किया करती है तैसे. यहां इस श्लोकमें पूर्णोपमालंकार है ॥ ८ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सद्रीतोपेऽलंकाराख्ये जातके मञ्जुलेऽस्मिन् ॥ भावाध्यायःश्रीगणेशेन वर्यैर्वृत्तैर्युक्तोऽष्टाभिरेष प्रणीतः ॥ ९ ॥ इति श्रीजातकालंकारे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अर्थ–मनोहर छंदोंकरके रचे हुए पंडितजनोंको प्रसन्न करनेवाले मनोहर इस जातकालंकार नामक ग्रंथमें श्रीगणेश-कविने उत्तम आठ श्लोकोंकरके यह भावाध्याय रचा है॥९॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ वंशाध्यायः ७।

अभूदवनिमण्डले गणकमण्डलाखण्डलः श्रुति-स्मृतिविहारभूर्विबुधमण्डलीमण्डनम् ॥ प्रचण्ड-गुणगुर्जराधिपसभाप्रभातप्रभाकवीन्द्रकुलभूषणं जगति काह्नजी कोविदः ॥ १ ॥

अर्थ–अवनिमंडल (पृथ्वीतल) में काह्नजी नामक पंडित भया वह जगत्में ज्योतिषियोंके प्रतिपादन करनेवाला, पंडि-तोंकी मंडलीका मंडन, शोभादायक, प्रचंडगुणवाले, गुर्जरदे-शके अधिपति राजाकी सभामें प्रभातसमयके उजियालेके समान प्रकाशवाला, कवींद्रजनोंके कुलका आभूषण ऐसा होता भया ॥ १ ॥

भारद्वाजकुले बभूव परमं तस्मात्सुतानां त्रयं ज्यायांस्तेष्वभवद् ग्रहज्ञतिलकः श्रीसूर्यदासः सुधीः ॥ श्रीमान् सर्वकलानिधिस्तदनुजो गोपा-लनामाभवच्छ्रीमद्देवविदां वरस्तदनुजः श्रीराम-कृष्णोऽभवत् ॥ २ ॥

अर्थ–सो यह भारद्वाज कुल (गोत्र) में होता भया इसके तीन पुत्र भये तिनमें बडा दैवज्ञोंमें श्रेष्ठ श्रीमान् सूर्यदास पंडित होता भया, तिसका छोटा भाई श्रीमान् सब कलाओंका निधि (खजानारूप) गोपालनामक होताभया, तिससे छोटा श्रीमद् दैवज्ञोंमें श्रेष्ठ श्रीरामकृष्ण नामक होता भया ॥ २ ॥

शाके मार्गणरामसायकधरा १५३५ संख्ये नभस्ये तथा मासे ब्रध्नपुरे सुजातकमिदं चक्रे गणेशः सुधीः ॥ छन्दोलंकृतिकाव्यनाटककलाभिज्ञः शिवाध्यापकस्तत्र श्रीशिवविन्मुदे गणितभूगोपालसूनुः स्वयम् ॥ ३ ॥

अर्थ–इनमें गोपाल नामक पंडितका पुत्र छंद, अलंकार, नाटक, कला (चित्रकर्म) इनको जाननेवाला और शिवनामक आचार्यका शिष्य ज्योतिषसिद्धांतशास्त्रको जाननेवाला, गणेशनामक कवि श्रीशिवनामक पंडितवरके आनंदके वास्ते पांच, तीन, पांच एक संख्यामें प्रमित अर्थात् पंद्रह सौ पैंतीसके शाकेमें भाद्रपद महीनेमें सूर्यपुरविषे इस सुन्दर जातक (जातकालंकार) को करता भया ॥ ३ ॥

ये पठिष्यन्ति दैवज्ञास्तेषामायुःसुखे शिवम् ॥
भूयात्कैरवकुन्दाभा सुकीर्तिः सर्वतो दिशम् ॥ ४ ॥

अर्थ-जो दैवज्ञजन इसको पढेंगे तिनके आयु सुखमें कल्याण बना रहो और कमल तथा कुन्दके पुष्पसमान सुन्दर स्वच्छ कीर्ति सब दिशाओंमें हो ॥ ४ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोपेऽलंकाराख्ये जातके मञ्जुलेऽस्मिन् ॥ वंशाध्यायः श्रीगणेशेन वृत्तैर्युक्तो वेदैः शैलसंख्यः प्रणीतः ॥ ५ ॥ इति श्रीगणेशेन विरचितजातकालंकारे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अर्थ-मनोहर छंदोंकरके रचे हुए और पंडितजनोंको संतुष्ट करनेवाले इस मनोहर जातकालंकारविषे चार श्लोकों करके श्रीगणेशकविने यह सातवां वंशाध्याय अर्थात् अपने वंशविख्यातिका अध्याय रचा है ॥ ७ ॥

इति श्रीबरेलीपुरनिवासिगौडवंशोद्भवद्विजशालग्रामात्मज-
बुधवसतिरामशास्त्रिविरचितजातकालंकारभा-
षाटीकायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अब्दे खबाणाऽङ्कधरामिते वैशाखे सिते नागतिथौ भृगौ च ॥
बस्त्यादिरामांतबुधेन भाषाटीका कृता स्वल्पधियां मुदे वै ॥

इति भाषाटीकासहितो जातकालंकारः समाप्तः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
कल्याण-मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
खेतवाडी-मुंबई.

जाहिरात.

ज्योतिष-ग्रन्थाः ।



की. रु. आ.

अर्घप्रकाश-भाषाटीकासमेत । इसमें तेजी-मन्दी वस्तु देखनेका विचार भलीभांति लिखागयाहै ०-५

आनन्दप्रकाश-भाषाटीकासमेत । यह ग्रन्थ ज्योतिषियोंकोअतीवउपयोगी है । इसमें-रोगकी स्थिति, असाध्यरोग किस प्रकार शान्त होगा तथा रोगमुक्ति, स्नानदानादि कितनेही उत्तम विषय लिखेगये हैं. ०-३

आर्यभटीय-(ज्योतिषशास्त्र) संस्कृतटीका भाषाटीकासमेत १-०

कर्णकुतूहल-सटीक तथा उदाहरणसहित । ब्रह्मपक्षीय गणित ग्रन्थ ०-१२

करणेन्दुशेखर-इसमें रव्यादि ग्रहोंकी सारणी भलीभाँति दीगईहै । तथा सिद्धान्तोक्त सब विषय संक्षेपसे इसमें आगये हैं ०-४

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.

"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयकी परमोपयोगी स्वच्छ शुद्ध और सस्ती पुस्तकें।

यह विषय आज ३० । ४० वर्षसे अविदित हुआ भारतवर्षमें प्रसिद्ध है कि, इस यन्त्रालयकी छपीहुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रमाणित हुई हैं सो इस यन्त्रालयमें प्रत्येक विषयकी पुस्तकें जैसे-वैदिक वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, छन्द, ज्योतिष, काव्य, अलंकार, चम्पू नाटक, कोष, वैद्यक, साम्प्रदायिक तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दी भाषाके प्रत्येक अवसरपर बिक्रीके अर्थ तैयार रहते हैं। शुद्धता स्वच्छता तथा कागजकी उत्तमता और जिल्दकी बँधाई देशभरमें विख्यात है। इतनी उत्तमता होनेपरभी दाम बहुतही सस्ते रक्खे गये हैं और कमीशनभी पृथक् काट दिया जाता है। ऐसी सरलता पाठकोंको मिलना असंभव है संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी २ आवश्यकतानुसार पुस्तकोंके मंगानेमें त्रुटि न करना चाहिये. ऐसा उत्तम, सस्ता और माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है. 'सूचीपत्र' मंगा देखो।

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना—
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण-मुंबई.